





हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी-१

प्रकाशक
ओम्प्रकाश बेरी
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पो बॉक्स नं. ७०, मानमन्दिर, वाराणसी–१.

प्रकाशन तिथि
दीपावली, १९६०

●

प्रथम संस्करण : २१००

●

मूल्य : ३ रु. ५० न. पै. मात्र

मुद्रक
श्री कृष्णचन्द्र बेरी
विद्यामन्दिर प्रेस (प्राइवेट) लि०
मानमन्दिर, वाराणसी–१



पूज्यपाद पिता

हिन्दी-संस्कृत के विद्वान् और जम्मू-काश्मीर राज्य की सेना के विशिष्ट अधिकारी कर्नल पंडित विश्वनाथ उपाध्याय की पुण्य-स्मृति में

*

पितृदेव !

बहुत आपने चाहा, मैं भी बनूँ बहादुर सैनिक,
पर मैंने उसके तुक में अखबार दुलारा दैनिक।
इसे मजाक कहूँ मैं विधि का गया निशाना चूक
क्योंकि अचानक कलम बन गयी इस कर में बन्दूक।
युग-प्रभाव है, या गलती यह हुई प्रूफ की केवल,
जो जीवन में 'जनरल' होता आज छपा वह 'जरनल'।
आप स्वयं शिव और हास्य के शिव हैं सफल विधाता,
अतः आपकी पुण्य-स्मृति में यह उपहार चढ़ाता।
हँसने और हँसानेवाली शिक्षा जो की अंकित,
'सुन्दर और असुन्दर' वह है आज बेधड़क अर्पित।





पुस्तक से पहले...

कुछ मित्रों का था सत्याग्रह
हुआ तकाजा ऐसा अहरह,
कुछ लोगों ने कर के यह-वह
किया उपस्थित कविता-संग्रह।

:o:

यह कविता-संग्रह है 'सुन्दर
और असुन्दर' बन कर शंकर,
आ पहुँचा है करते हर-हर
लिये रूप अर्ध-नारीश्वर !

:o:

इसमें ऐसी कविताएँ हैं
जो कि हास्य की उल्काएँ हैं,
कुछ बाएँ हैं कुछ बाएँ हैं
भाव अनूठे उठ आये हैं।

:o:

उस युग की हैं ये कविताएँ
जब कि प्रश्न था हम क्या खायें !
घर को छोड़ कहाँ हम जायें ?
जब कि प्रश्न था अलख जगायें।

:o:

अरे जमाना वह अंग्रेजी
थी मुसाहिबों की ही तेजी !
कहाँ कलेजा, कहाँ कलेजी
फिर भी कवि ने यह लिख भेजी ।

:o:

अरे गुलामी का वह युग था
गोरे टामी का वह युग था,
केवल हामी का वह युग था
हाँ, बदनामी का वह युग था ।

:o:

उस युग में था जीवन जाली
ऊपर थुल-थुल भीतर खाली,
बात-बात पर मिलती गाली
रही लाल पगड़ी की लाली !

:o:

उस युग में ऐसा शासन था
करना पड़ा मयूरासन था,
अरे कहीं भी कुछ ह्रास न था
बस कण्ट्रोल और राशन था ।

:o:

उस युग में काफी झगड़े थे
झगड़े भी पूरे तगड़े थे,
पग-पग पर कानून अड़े थे
कानूनों के कान खड़े थे !

:o:

उस युग में फिर कैसा हँसना
हें-हें में ही रहा बिलसना,
कुछ विरोध करना था धँसना
कुछ भी लिखना था बस फँसना !

:o

रही हुकूमत विकट विदेशी
लेना नाम हराम स्वदेशी,
बात-बात पर होती पेशी
जनता क्या थी बनी मवेशी।

:o:

वह युग था बदनाम बेधड़क
सब कुछ थे हुक्काम बेधड़क,
जनता रही गुलाम बेधड़क
डरती आठों याम बेधड़क !

:o:

यही राय थी आम बेधड़क
रखना अपना नाम बेधड़क,
लिखना कठिन कलाम बेधड़क
खतरनाक था काम बेधड़क !

:o:

फिर भी उस युग में ऐसे नर
नर क्या, उन्हें कहूँगा नाहर,
वे निकले हिम्मत से बाहर
जैसे गांधी और जवाहर !

:o:

महामना, सरदार आ गये
मौलाना, गफ्फार आ गये,
करते जयजयकार आ गये
नेताओं के हार आ गये।

:o:

इनकी हुई पुकार, आ गये
छोड़-छोड़ घर-बार आ गये,
लेकर जोश अपार आ गये
लो, दस बीस हजार आ गये !

:o:

इन लोगों ने पायी हिम्मत
और हुई इकजाई हिम्मत,
फिर ऐसी दिखलायी हिम्मत
जनता को भी आयी हिम्मत !

:o:

फिर क्या था फिर हिम्मत जागी
इस जनता की जड़ता भागी,
नेता बने हमारे त्यागी
शासन ने ठहराया बागी !

:o:

गाड़ी खड़ी ढकेल चले कुछ
प्राणों पर यों खेल चले कुछ,
कठिन मुसीबत झेल चले कुछ
हँसते-हँसते जेल चले कुछ ।

:o:

फिर क्या सभी विरुद्ध हो गये
वालण्टियर विशुद्ध हो गये,
भरी अहिंसा बुद्ध हो गये
लेकिन अफसर क्रुद्ध हो गये ।

:o:

असहयोग का नमन चला फिर
शासन का भी दमन चला फिर,
कहता हूँ कुछ कम न चला फिर
उसका ज्यादा दम न चला फिर ।

:o:

जनता का जब जोश न छीजा
अंगरेजों का क्रोध पसीजा,
निकला उसका यही नतीजा
मौज कर रहे चचा-भतीजा ।

:o:

तो कहने का मेरे मतलब
इस संग्रह की कविताएँ सब,
मेरे पाठक पढ़ लेंगे जब
समझेंगे इस का महत्त्व तब ।

:o:

उस युग में कवि ने जो देखा
(पार कर गया लक्ष्मण-रेखा),
कहा किसी ने तू भी ले खा
यहाँ उसी का प्रस्तुत लेखा !

:o:

सन् सैंतिस से सैंतालिस तक
कविताएँ जो लिखीं बेधड़क
उनमें से कुछ ले कर चौचक
संग्रहणीय बनी यह पुस्तक ।

:o:

हँसना भी अच्छा चस्का है
हँसना भी अपने वश का है,
जो महत्त्व यह जान सका है
पाठक वही हास्यरस का है ।

:o:

अगर एक भी कविता पढ़ कर
(जादू वह जो बोले चढ़ कर),
आप हँस पड़े थोड़ा जी भर
तो समझूँगा सफल वहीं पर !

:o:

इस युग में थोड़ा हँस लेना
कविता में भी कुछ रस लेना,
जीत किसी को बरबस लेना,
बहुत कठिन है यह यश लेना ।

:o:

जो कुछ हो, पुस्तक है सम्मुख
इसमें जो सुन्दर उस का सुख,
और असुन्दर जो उस का दुख
यही सगझ लें इस का आमुख ।

:०:

कहीं प्रूफ का घन चक्कर है
टाइप कहीं रुका थककर है,
फिर भी छपी बहुत सुन्दर है
यह कहने में तनिक न डर है ।

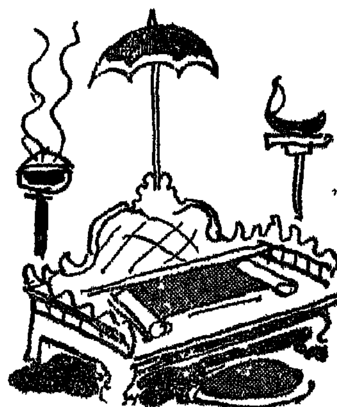
:०:

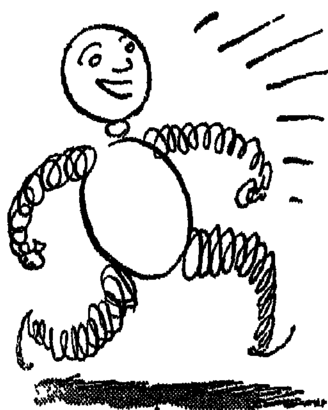
और कहूँ क्या बात घनेरी
इसमें कितनी गलती मेरी,
हुई प्रकाशन में क्यों देरी
यह बतलायेंगे श्री बेरी ।

'विश्वकुटी'
सराय गोवर्धन, वाराणसी



—'बेधड़क' बनारसी





'सुन्दर और असुन्दर' में हैं....



सुन्दर

और

असुन्दर



मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ

– १ –

तुम पूछ रहे मुझसे क्योंकर
मेरे इस जीवन का परिचय
मैं कल-कल छल-छल हर-हर कर
हो जाता अपने में ही लय

मैं सरिता और समुन्दर दोनों साथ-साथ
मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ !



– २ –

मैं कवि हूँ सुघर, नजाकत की
मैं हरी घास नित चरता हूँ
है सूरत भले जनानी, पर
मरदानी कविता करता हूँ

मुछ-मुण्डा और मुछन्दर दोनों साथ-साथ
मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ !

– ३ –

मैं अवसर-वादी नेता हूँ
कुछ मौके ढूँढ़ा करता हूँ
मैं जनता का सेवक बन कर
कुछ चेले मूँड़ा करता हूँ

मैं माया और मछिन्दर दोनों साथ-साथ
मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ !

– ४ –

मैं भोंदू गन्दे लोगों से
अनजाने ही हिलमिल जाता
पर साथ सभ्य महिलाओं के
मुख-मण्डल पर भी खिल जाता

मैं उबटन और लवेण्डर दोनों साथ-साथ
मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ !

— ५ —

मं सम्पादक हूँ किन्तु प्रकाशक
के डमरू पर नाच रहा
शौकीन लेखकों को भी पर
मै देता रोज कुलाँच रहा
में बन्दर और कलन्दर दोनों साथ-साथ
मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ !

— ६ —

मैं ब्राह्मण हूं पर अप-टु-डेट
मैं अपनापन ही भूल गया
था बँधा-लपेटा पहले मैं
पर अब काँटे पर झूल गया
मैं पत्रा और कलेण्डर दोनों साथ-साथ
मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ !

— ७ —

मं प्रगतिशील हूँ आहों की
लू से सर-गरमी लाता हूँ
अपने जोशीले भाषण से
लोगों के दाँत बजाता हूँ
मैं अप्रिल और नवम्बर दोनों साथ-साथ
मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ !

— ८ —

मैं साम्यवाद का पोषक हूँ
मैं श्वेत और बादामी हूँ
फलहारी और अनाजी हूँ
सम्पूर्ण जगत में नामी हूँ

मैं आलू और चुकन्दर दोनों साथ-साथ
मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ !

— ९ —

मैं प्रोफेसर हूँ अलबेला
लड़कों पर रोब जमाता हूँ
पर घर में बीबी के डर से
बच्चों को गोद खिलाता हूँ

मैं कायर और सिकन्दर दोनों साथ-साथ
मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ !

— १० —

जब 'उनकी' डाँट-डपट पड़ती
अपनी सुध-बुध खो देता हूँ
चिल्ल-पों मचाता हूँ पहले
फिर चुपके से रो देता हूँ

मैं वर्षा और बवण्डर दोनों साथ-साथ
मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ !

— ११ —

जिससे मुझको अनुभूति मिले
मैं उसी वेदना से डरता
देखूँ अन्धा बन जाता हूँ
ज़िन्दा रहता हूँ या मरता

मैं मणिधर और छछुन्दर दोनों साथ-साथ
मैं सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ-साथ !





[एक कवि और कविता का मजाक]

मुझसे मेरा नाम न पूछो !

ऊबड़-खाबड़ इस किस्मत का मैं करने फैसला चला हूँ
फैशन, फूट, फरेब, गुलामी के चौराहे पर निकला हूँ

प्रातः उनका मुँह देखा है,
कैसी होगी शाम न पूछो !

मैं कवि, लेखक, साहित्यिक हूँ, मैं एम. ए. साहित्यरत्न हूँ
उनके दफ्तर में घिस-घिस कर करता जीने का प्रयत्न हूँ

किसी तरह कुछ काम कर रहा
काम बढ़ेगा, काम न पूछो !

यों तो फर्स्ट क्लास आने-जाने का सहज किराया लेता
लेकिन थर्ड क्लास में चलकर सदा साथ जनताका देता

जो देना हो चुपके से दो
दाम बढ़ेगा, दाम न पूछो !



ब्लेड न मिलता उनकी दाढ़ी बढ़ी, शक्ल भाल हो आयी
कश्मीरी कपोल पर मानों अब काली पलटन चढ़ धायी

उन्हें देख कर भाग रहे हैं
क्यों मिलता हज्जाम, न पूछो !

'तेरे माता-पिता मूर्ख हैं, क्या जानें उद्‌गार हृदय का'
भावी पत्नी को लिख भेजा था जो मैंने इस आशय का—

पत्र पढ़ लिया हाय ससुर ने
क्या होगा परिणाम, न पूछो !

नून तेल लकड़ी के कारण घरमें लड़ने की परिपाटी
कभी-कभी हल्दी के पीछे घर बन जाता हल्दीघाटी

पानी के पीछे पानीपत का
मचता संग्राम न पूछो !

'उनकी' कृपा दूसरे-चौथे जीवन में उपवास हो रहा
कम खाने का, गम खाने का इसीलिए अभ्यास हो रहा

करता हूँ बेधड़क आजकल
कितना प्राणायाम, न पूछो !





लक्ष्य मेरा दूर भी है, पास भी है।



राशनिंग है और कुछ कण्ट्रोल भी है,
ढोल है तो ढोल में अब पोल भी है

क्योंकि—

चित्त प्रसन्न और उदास भी है,
लक्ष्य मेरा दूर भी है, पास भी है।



धूल कंकड़ जो मिले सब कुछ मिलाओ
है तुम्हारा राज्य चाहे जो खिलाओ

क्योंकि—

मुझको भूख भी है, प्यास भी है,
लक्ष्य मेरा दूर भी है, पास भी है।



प्यार के ही साथ मुझ पर मार भी है
मार के ही साथ कुछ अधिकार भी है

क्योंकि—

पति के साथ बन्दा दास भी है,
लक्ष्य मेरा दूर भी है, पास भी है।



क्या बताऊँ यार, यह किसकी कृपा है
लेख के ही साथ 'फोटू' भी छपा है

क्योंकि—

सम्पादक नया, छपवास भी है,
लक्ष्य मेरा दूर भी है, पास भी है।



जो कहे वह आज करना पड़ रहा है
जिन्दगी के लिए मरना पड़ रहा है

क्योंकि—

लीडर ही नहीं, बदमाश भी है,
लक्ष्य मेरा दूर भी है, पास भी है।



आप आवें आपका स्वागत करेंगे
राशनिंग से हम नहीं कुछ भी डरेंगे

क्योंकि—

आँगन में हमारे घास भी है,
लक्ष्य मेरा दूर भी है, पास भी है।



प्यार में इसको मिला 'कम्पार्टमेण्टल'
इसलिए उसका हुआ है चित्त चञ्चल
क्योंकि—

वह तो फेल भी है, पास भी है,
लक्ष्य मेरा दूर भी है, पास भी है।



सामने रख दो हमारे प्लेट भर कर
मैं उठूँगा आज अपना पेट भर कर
क्योंकि—

दो दिन से हुआ उपवास भी है,
लक्ष्य मेरा दूर भी है, पास भी है।



काव्य में गति है, मगर वह मन्द भी है
छन्द भी है, किन्तु वह स्वच्छन्द भी है,
क्योंकि—

उपमा में विरोधाभास भी है,
लक्ष्य मेरा दूर भी है, पास भी है।



खूब यश लो, खूब कस लो, खूब रस लो
बेधड़क इस जिन्दगी में खूब हँस लो

क्योंकि—

अब यह हास्य च्यवन - प्रास भी है,
लक्ष्य मेरा दूर भी है, पास भी है।





[एक टूटते हुए तारे को देखकर अनेक कल्पनाएँ]

★

फेंका है यह फूल किसी ने
या छोड़ा है स्कूल किसी ने
या कि गगन ने देख किसी को
ऊपर से है ढेला मारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



बहुत पुराना था यह कैदी
इसने दिखलायी मुस्तैदी
मौका पा कर जय-प्रकाश - सा
चुपके से भागा बेचारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



यह आगा खाँ का घोड़ा है
बड़ी तीव्र गति से दौड़ा है
या कि हंस है राशन-युग का
दौड़ा जो चुगने को चारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



इसने लखा न नीचे ऊपर
स्वर्ग छोड़ कर आया भू पर
मजनू-सा दौड़ा, लैला ने
मानों इसको किया इशारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



यह पौडर-कण है रजनी का
या आँसू - कण है सजनी का
गिरा अचानक अनजाने ज्यों
इस थर्मामीटर से पारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



सगुण हुआ यह निराकार है
अथवा कोई फ़िल्म-स्टार है
जो अभिनय करने को कूदा
ऊपर से बनकर आवारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



फेल हुआ यह विद्यार्थी है
किम्बा कोई शरणार्थी है
या उम्मीदवार है कोई
उप - चुनाव में जो है हारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



यह कोई है गोरा अफसर
मौका पा कर बन कर निशिचर
भागा ताबड़ - तोड़ यान पर
सुन 'अम्बर छोड़ो' का नारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



समाचार यह फ्लैश हो गया
फुलिस्टाप से डैश हो गया
बिन बादल बिजली चमकी यह
जगा किसी का भाग्य सितारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



बहुत पुराना स्वर्ण सदन का
फ्यूज हुआ यह बल्ब गगन का
जिसे देख कर अब तक प्रेमी
दूर कर रहा था अँधियारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



गगन-तश्तरी में बिखरा - सा
फूट गिरा यह एक बतासा
या होम्योपैथी की गोली
गिरी किसी बच्चे के द्वारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



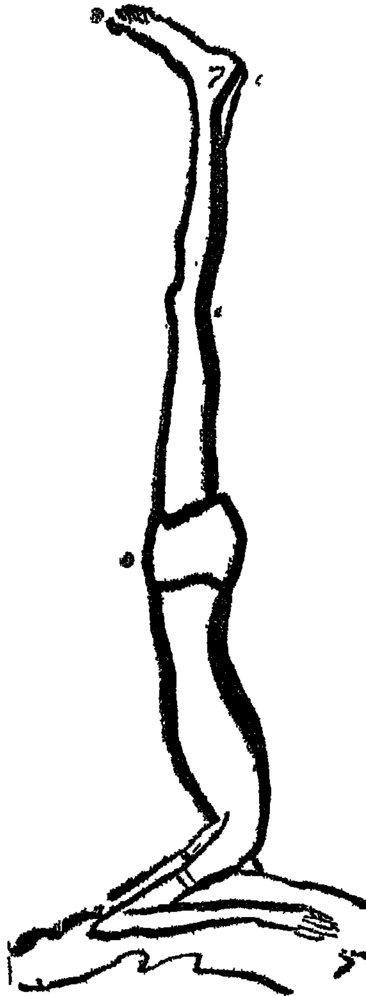
दिवस-निशा में क्रिकेट हो रहा
'फाल' किसी का 'विकेट' हो रहा
देखो, चाँद खिलाड़ी ने है
यह 'बाउण्ड्री का हिट' मारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



कोई हत्याकाण्ड हो गया
परिचित यह ब्रह्माण्ड हो गया
कहीं न कोई शोर - गुल मचा
शान्त रह गया यह जग सारा,
दूर गगन में टूटा तारा।



युग युग से पढ़ते आते हैं
फिर भी इसे न पढ़ पाते हैं
'शार्ट - हैण्ड' में लिखा बेधड़क
वाक्य विधाता का यह न्यारा,
दूर गगन में टूटा तारा।





बी. ए., एम. ए. का पट देखा
बेकारों का जमघट देखा
डिग्री के पीछे लड़कों का
सारा जीवन चौपट देखा।

हमने देखा कन्वोकेशन
जो देख प्रसन्न हुआ था मन
कर रहा यहाँ कंजूसी से
मैं उसका "थोड़ा-सा वर्णन।

युनिवरसीटी के प्रांगण में
उस दिन न्यौता जब मिला हमें
खुश हुए बहुत, छुट्टी लेकर
मित्रादि सहित हम वहाँ जमे।

हम गद्‌गद थे पण्डाल देख
शोभा से मालामाल देख
विद्वानों की मण्डली देख
छात्रों का झुण्ड विशाल देखा।

हमने देखे झलमल - झलमल
रंगीन साड़ियों के 'माडल'
भ्रम होता था मानो होगा
सौन्दर्य प्रदर्शन का दंगल।

यह दृश्य यहाँ सब छोड़ देख
सूटों बूटों की होड़ देख
फैशन में ताबड़तोड़ देख
कुछ रहा न बाकी, जोड़ देख !

कुछ आये भाषण सुनने को
कुछ आये मतलब गुनने को
अपनी कन्याओं के खातिर
कुछ थे आये वर चुनने को।

कुछ क्षीणकाय कुछ हृष्ट-पुष्ट
कुछ मस्त मस्त कुछ असन्तुष्ट
शिक्षा के पलड़े थे समान
कुछ बहुत सभ्य कुछ बहुत दुष्ट।

विद्यार्थी मुग्ध भविष्य देख
विद्या थी मुग्ध हविष्य देख
गुरु मुग्ध हुए थे शिष्य देख
हम मुग्ध हुए यह दृश्य देख।

मत देखो अब तुम इधर-उधर
कर लो अपनी उस ओर नजर
आ रहा स्नातकों का जुलूस
रेंगता हुआ जैसे अजगर।

आगे आगे हैं रजिस्ट्रार
फिर डीन फैकल्टी की कतार
अध्यक्ष विभागों के पीछे
थे मुख्य प्रतिथि पदगति सँभार।

वी. सी. थे उनके साथ और
निज 'डाक्टरेट' का पहन मौर
वे सबके सब थे 'क्लीन-शेव्ड'
सब लोगों का था हुआ क्षौर।

कुछ पूछ रहे ये कौन चले
कुछ हँसते-से, कुछ मौन चले
'ये डिग्री लेने वाले हैं—
पहने साफा-हुड-गौन चले।'

कुछ तेज चले, कुछ मन्द चले
कुछ घोड़े ऊँट गयन्द चले
कुछ बन बनारसी साँड़ चले
कुछ बन कर केंचुआ छन्द चले।

ये तीर धनुष से टूट चले
कालेज की मस्ती लूट चले
जीवन को करते हूट चले
नवजीवन के रँगरूट चले।

किस मिट्टी के ये ढेले हैं
किन गुरुओं के ये चेले हैं
जीवन में इन लोगों ने क्या
पापड़ ही पापड़ बेले हैं!

मालूम हमें ये ऐसे हों
बूचड़खाने के भैंसे हों
डिप्लोमा यों बाँटे जाते
सिनेमा की नोटिस जैसे हों!

इस जीवन में बेमेल हुए
सस्ते रेंड़ी के तेल हुए
हैं समझ रहे सब पास हुए
लेकिन सचमुच सब फेल हुए।

जब कालेज के बंधन टूटे
तब किस्मत के हंडे फूटे
बस डिग्री की दुम हिला रहे
घर और घाट दोनों छूटे।

अभिलाषाओं का था तूहा
मचता था जीवन में हू-हा
पर वही मसल आयी आखिर
खोदा पहाड़ निकला चूहा।

बी. ए. वाले बेकार हुए
बी. टी. वाले बटमार हुए
एम. ए. वाले मुहताज हुए
एल-एल बी. भी लाचार हुए।

एम. एस-सी. मिस्सी बेच रहे
एल. टी. हैं लिट्टी सेंक रहे
कुछ असफल होकर, डल होकर
शायर बन कर हैं रेंक रहे।

घर का क्या सुख-दुख बाँटेंगे
बेकारी में दिन काटेंगे
जब भूख लगेगी डिग्री में
कुछ शहद लगा कर चाटेंगे।

भावों में मधुर निगूढ़ रहे
अब किंकर्त्तव्य-विमूढ़ रहे
कुछ हें-हें कर कुछ में-में कर
आफिस में क्लर्की ढूँढ़ रहे।

युनिवरसीटी के क्षण जागे
शिक्षा के पावन कण जागे
भारतमाता के व्रण जागे
इन पढ़े-लिखों के रण जागे।

निज कालेज का अभिमान खोल
अपनेपन का अरमान खोल
कुछ कपड़ों की, कुछ जूतों की
बैठे हैं अब दूकान खोल।

कुछ तो लीडर अभिराम बने
कुछ कम्युनिस्ट बेकाम बने
शुभ ज्योतिर्मय सैलून खोल
कुछ अपटुडेट हज्जाम बने।

जीवन कछुवे-सा लसड़-पसड़
चलता बेकारी से लड़-लड़
हो गयी कल्पना यों सुन्दर
ऊँटों का जैसे हो कूबड़।

नीरव स्वर में मेरे भइया
चिल्लायेंगे बप्पा - दइया
'वाण्टेड' रूपी परवाने पर
लपकेंगे यों ज्यों बिस्तुइया।

यह जलसा छिछले जल-सा है
छायावादी टलमल-सा है
जीवन-खटिया पर कालेज के
गद्दे में यह खटमल-सा है।

बी. ए., एम. ए. का पट देखा
बकारों का जमघट देखा
डिग्री के पीछे लड़कों का
सारा जीवन चौपट देखा।





वह मेरी पहली कविता थी।

रात रात भर जाग-जाग कर
कुछ कक्षा से भाग-भाग कर
शब्दों के तुक गढ़ता था मैं
खाना-पीना सभी त्याग कर

क्या बतलाऊँ मैं, वह क्या थी,
वह मेरी पहली कविता थी।

भाव बेतुके, छन्द बेतुका
छन्दों का था बन्द बेतुका
नयन बन्द करके पढ़ने में
आता था आनन्द बेतुका

वह अनुपम सुख की दाता थी,
वह मेरी पहली कविता थी।

उसमें अद्‌भुत अलंकार था
प्रिय का प्रिय के प्रति दुलार था
उसमें परिमल का तुक खटमल
या अपार का तुक कपार था

हँसे जिसे सुन संगी-साथी,
वह मेरी पहली कविता थी।

जब उसका निर्माण हुआ था
दो गज ऊपर प्राण हुआ था
'कविजी आये, कविजी आये'
इन शब्दों में मान हुआ था

बस मैं था मेरी पूजा थी,
वह मेरी पहली कविता थी।

कोई उतना सुख न पा सका
क्या उदाहरण व्यास-भास का
'विद्या' को उत्तर दे इतना
दिल न खिला था कालिदास का

जिसने मेरी प्रतिभा ना थी,
वह मेरी पहली कविता थी।

न था क्रौंच-हित उसमें क्रंदन
और न राम-नाम का वंदन
'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'
का न वहाँ था कुछ अभिनंदन

वह अनुपम थी, खुद उपमा थी,
वह मेरी पहली कविता थी।

चाहा मैंने उसे सुनाऊँ
कवि-सम्मेलन में यश पाऊँ
मैंने सस्वर पाठ किया जब
जनता बोली—— म्याऊँ म्याऊँ

सफल सिद्ध वह असफलता थी,
वह मेरी पहली कविता थी।

नाम-कमाऊ प्यास जगी थी
अखबारों की आस लगी थी
इधर-उधर मैं भटक रहा था
मुझको मधुर छपास लगी थी

काव्य-मद भरा था मैं हाथी,
वह मेरी पहली कविता थी।

दैनिक ने 'इनकार' कह दिया
मासिक ने 'बेकार' कह दिया
साप्ताहिक के सम्पादक ने
तो उसको कतवार कह दिया

साँस चली मेरी ज्यों भाथी,
वह मेरी पहली कविता थी।

पर वह कल अब आज बन गया
मैं कवि से कविराज बन गया
मेरी कविता सुनने को अब
व्याकुल सकल समाज बन गया

वह मेरी उन्मुख प्रतिभा थी,
वह मेरी पहली कविता थी।



रूप नहीं खोता है

खो जाता है प्रेमी का दिल जब-जब यह टोता है।

रूप, इसे विधिने अपने हाथों लीपा-पोता है,
रूप, एक लादी है दिल का गधा जिसे ढोता है।

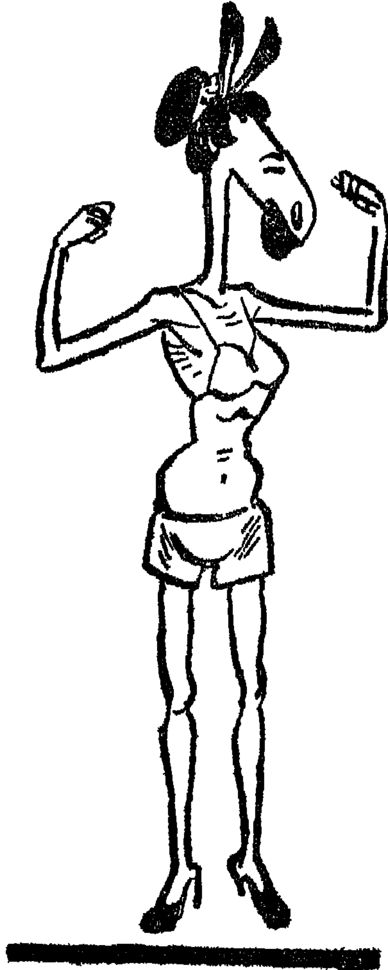
औरों को भी सदा जगाता और न खुद सोता है,
रूप, कथा-वाचक न्यारा है, सारा जग श्रोता है।

हँसता धूप, और बमबर्षा होती जब रोता है,
धोता दिलको फींच-फींचकर ज्यों धोबी धोता है।

चौबिस घण्टे जगह-जगह पर किस्सा यह होता है,
कभी भयङ्कर बाज कभी सीधा-सादा तोता है।



घोंघा हो, कवि हो, कोई हो, खाता वह गोता है,
कभी चाय भी नहीं पिलाता, देता नित न्योता है।
दिलको बैल बना प्रेयसि ने अपना हल जोता है,
और बेधड़क ऊसरमें भी प्रेम-वृक्ष बोता है।
यह रूप नहीं खोता है।





पिस रहे हो बैल-से ग्रेजुएट !
दिल लगाये चल रहे हो आज खाली पेट।



घिस रहे हो तुम कलम क्यों आज बनकर क्लर्क
कर रहे हो तुम समर्पित आह का मधुपर्क
तुम बने भैंसा तथा साहब बना यमराज
और आफिस है तुम्हारा या कि पूरा नरक
जिन्दगी को कर रहे क्यों आज मटियामेट ?





बैठ आफिसकी अरे उन कुर्सियों पर आज
है जहाँपर खटमलोंका एक अपना राज
चूसते थे रक्त शोषक और फिर भी मौन
मच्छरों की फौज ऊपर कर रही आवाज
राष्ट्र की इन शक्तियोंको क्या सको मेट ?



हाय, पढ़ने में रहे तुम नित्य मक्खीचूस
उस समय था यों न जाग्रत अमरिका या रूस।
बाप का धन था प्रचुर तुमने उड़ायी मौज
डबल रोटी, बटर, बिस्कुट और लेमनचूस।
दाल-रोटी से तुम्हें था बहुत ही परहेज
तुम सुशोभित कर रहे थे होटलों की मेज।
नित्य अभिनव सूट सिल जाये, यही था मर्ज
धोबियों का नाइयों का भी लदा था कर्ज।
दाग दिल में और मुँहमें था लगा सिगरेट।



जब परीक्षा काल आया तुम पड़े बीमार
मच गया परिवार में था हाय हाहाकार
डाक्टर क्या समझ पाता यह तुम्हारा रोग
(क्या न गीता में कहा भगवान् ने हठयोग)
कौन जाने यह बीमारी का बहाना मात्र
सूखकर काँटा हुआ तब यह तुम्हारा गात्र !
इस तरह तुम हो गये थे जिन्दगीमें लेट।



किन्तु कबतक हाय कागजकी चलेगी नाव
अहह, फिर पड़ने लगी तुमपर वही बेभाव
जब कि इण्टरमें लगे तुमको सखे छः साल
क्यों न बी० ए० आठ सालों में करे बेहाल
जबरदस्ती हो गये तुम धन्य बी० ए० पास
खबर सुनकर बबर हुई उस काल भावी सास
खुल गया तकदीर का मानो अचानक गेट।



मित्र बोला—यार मेरा हो गया आबाद
और पत्नी ने कहा—यह तो बना फरहाद
ससुर भी फिर मुस्कुराये—ठीक है दामाद
यह जमींदारी करेगा, हम करें जयनाद
बाप ने सोचा—बनेगा पुत्र मेरा लार्ड
सास बोली—यह तो होगा रेलवे का गार्ड
कुछ बना बैठे कलक्टर और मैजिस्ट्रेट।



पर किला वह था हवाई और टेढ़ी खीर
घूस देकर क्या बदल सकती कभी तकदीर
तुम हुए बेकार शादी हो गयी बेकार
लद गयी बीवी, अरे फिर लद गया शिशु-भार
और थाली से अचानक बन गये तुम प्लेट।



किस तपस्यामें हुए तुम इस तरह से क्षीण
टूट कर बेकार क्यों है यह हृदय की वीण!
डिग्रियों की पूंछ थी, फिर भी न थी कुछ पूछ
क्या इसी के वास्ते तुमने मुंड़ा दी मूँछ!
फैशनेबुल तुम बने क्यों आज डाँवाडोल
आह लो तुम खींच, आ जाये अभी भूडोल
आज तुम हड़ताल कर दो उलट जाये सृष्टि
खन-खनन तनखाहकी होने लगी अति वृष्टि
देख कर कहने लगें सब खूब निकला पूत
बेधड़क सिर पर चढ़ा हो लीडरी का भूत
फिर गरीबी से न होगी जिन्दगी की भेंट!
पिस रहे हो बैल-से ग्रेजुएट!





[कवि बच्चन के 'प्रार्थना मत कर, मत कर' की धुन पर]

मूँड़न, टूड़न या नकछेदन

शादी पर मिल रहा निमन्त्रण

कवि-सम्मेलन हुआ आजकल महफिल और थियेटर

कविता मत कर, मत कर, मत कर!



हाव - भाव - मय लास्य - प्रदर्शन
वाणी में स्वयमेव छनन - छन
हो जाते कवि, कौशिक, विरही, निशिचर सभी बराबर
कविता मत कर, मत कर, मत कर !

× × ×

नित पुलकित हर्षित मनभावन
लेकर तुरत फीस इक्यावन
पहुँच न पाती जहाँ अप्सरा वहाँ पहुँचते कविवर
कविता मत कर, मत कर, मत कर !

× × ×

सिनेमा, दंगल और रेडियो
हो प्रदर्शनी या 'कुछ' भी हो
कर शृंगार उपस्थित, सस्मित मदभर लेकर मधु स्वर
कविता मत कर, मत कर, मत कर !

× × ×

लम्बे बाल और दुबला तन
जिससे जगमग कवि-सम्मेलन
यह कवि की तसवीर नहीं, वेश्या की है रे शायर
कविता मत कर, मत कर, मत कर !





इस दुनिया में अलबेला हूँ
करता सबकी अवहेला हूँ
दुनिया वाले चेले मेरे
मैं नहीं किसी का चेला हूँ

सब लोग दंग रह जाते हैं,
मैं करता हूँ ऐसा प्रचार।

लोगों का कष्ट हरा करता
धो धो कर घाव भरा करता
मैं शङ्कर और लयङ्कर भी
मैं नाना रूप धरा करता

बाहर रहता हूँ होशियार,
दिल में बिल करता अहङ्कार।

मैं सम्पादक कहलाता हूँ
लोगों का दिल बहलाता हूँ
अफसर पर रोब जमाता हूँ
पूछो न कभी क्या खाता हूँ

मेरे आफिस के आँगन में
होती रहती है जीत-हार।

मैं जो चाहूँ वह छप जावे
मैं जो चाहूँ वह खप जावे
मैं यदि चाहूँ तो बड़े बड़े
लोगों की गर्दन नप जाये

अपना भ्रम-संशोधन कर कर
करता हूँ जनता का सुधार।

कवि-लेखक मेरे घर आते
कुछ मधुर विनय हैं कर जाते
छपवा कर अपनी रचनाएँ
सचमुच जीवन में तर जाते।

हें-हें का अभिनय होता है
मैं पात-पात, वे डार-डार।

जब लगती लोगोंको छपास
जब बनते हैं वे वेद-व्यास

मुझको गणेश का आसन दे
बन जाते मेरे चरणदास।
जब जब भक्तों पर भीड़ पड़े
तब तब करते मेरी पुकार'

मैं जितना करता तिरस्कार
वे उतना करते नमस्कार
कहते हैं बस दीजिये छाप
जो कहिये दे दूँ पुरस्कार।
इतना सुनकर कुछ खा-पी कर
मैं लेता हूँ खट्टी डकार।

अपने धनका अभिमान जिन्हें
निज 'लीडरत्व' का ज्ञान जिन्हें
दुनिया कहती देवता जिन्हें
दुनिया कहती हैवान जिन्हें
वे सब आते हैं मतलब पर
मेरे घर-दर पर बार-बार।

लीडर आते, प्लीडर आते
राजाओं के अनुचर आते
विधवाश्रम के मन्त्री आते
सन्त्री आते, अफसर आते
कहने का मतलब सब आते
बाभन धोबी कायथ चमार।

सब करते हैं मेरी जय जय
मैं हूँ अनादि, मैं हूँ अव्यय
मैं महादेव - सा बना पूज्य
मेरा आफिस है देवालय

आते हैं लेकर 'पत्र' 'पुष्प'
कहते हैं सब धर्मावतार।

मैं नेताओं में नेता हूँ
बालू में नौका खेता हूं
उसको विधिका लेखा समझो
मैं जो कुछ भी लिख देता हूँ

हों पढ़े - लिखे या महा-मूर्ख
सबका बेड़ा कर रहा पार।

यद्यपि न किसी से डरता हूँ
सबका विज्ञापन करता हूँ
अपनी मनचाही खबरों से
कालम के कालम भरता हूँ

कितना छपता है मत पूछो
लेकिन बिकता है धुँआधार।

रह जाते पढ़ कर लोग दंग
हो जाता चोखा रंग - ढंग
हैं नसें फड़कने लग जातीं
नर्त्तन करता है अंग-अंग

जब मनगढ़न्त सनसनीखेज
छप जाते हैं कुछ समाचार।

मुझमें सेवक बनने का दम
'मैं' भी बन जाता है जब 'हम'
मुझको न किसी की चिन्ता है
चिर जीवे कैंची और कलम

कैंची से करता कतर-ब्योंत,
यह कलम प्रबल करती प्रहार।

लेखों में रमता रहता मन
फाइलें पुरानी मेरा धन
मेरी पूंजी है बहुत बड़ी
अगणित अखबारोंका कतरन

पाठकगण समझ न पाते हैं
मेरी कैंची का चमत्कार।

करती सबका संहार कलम
उगला करती अंगार कलम
हो तोप, टैंक, तलवार भले
करती सबको बेकार कलम

सब कहते हैं बेधड़क इसे
यह निराकार, यह निर्विकार।
मैं पत्रकार मैं पत्रकार!



बापू के प्रति

★



सूटेड-बूटेड भी अब काँपते

देखके आज तुम्हारी लँगोटी

जेब-घड़ी रखते पर वो कटि में लटकी करती नित क्रन्दन
पाँव में चप्पल है कर में लकुटी वह घूम के आयी जो लन्दन
आँख पै ऐनक और शरीर पै एक लँगोटी जो राष्ट्र का है धन
क्यों न हँसे यह विश्व तुम्हें लख बापू, तुम्हारा अजीब है फैशन !

× × ×

वा लकुटी, घड़ी, ऐनक पै नित नूतन फैशन को तजि डारौं
'फाइन' रेशमी थानके थान लँगोटी पै खद्दर के अब वारौं
दावतों और टी-पार्टियों के सुख जेल की रोटियाँ खाइ बिसारौं
भारतसे अंगरेजन को कर में तकली चला आज निकारौं ।

× × ×



कृष्ण हो, किन्तु श्वेतांगिनी स्लेडको आज बना दिया भक्तिनी मीरा
और जिना हुए कायदे आजम और बना वह नून भी हीरा
छू दिया हाथ से जादू किया इस ताड़ी को आज बना कर नीरा
जो लिखूँ व्यर्थ है, शब्द समर्थ कहाँ, मुँह ऊँटके है वह जीरा।

× × ×

मौन नहीं रहते हो वरंच सदा रचते नये खेल हो बापू
खूब तुम्हारी है शक्ति अनोखी निकालते बालूसे तेल हो बापू
आज गुलामी के बाज को मारने के लिए नेक गुलेल हो बापू
धन्य हो, राष्ट्र के ऊँटकी हाथ में लेकर बैठे नकेल हो बापू।

× × ×

जो थे अमीर बड़े बनते उनको भी खिलायी है जेल की रोटी
शक्तियाँ हो बड़ी सामने आ गयीं, काटते हो उनको भी चिकोटी
गायब हो रही यों परतन्त्रता ज्यों सिरसे हुई गायब चोटी
सूटेड-बूटेड भी अब काँपते देख के आज तुम्हारी लँगोटी।

× × ×

विश्व विमुग्ध बना सुनता है कथा जिसकी वह व्यास तुम्हीं हो
वेद तुम्हीं हो, पुराण तुम्हीं हो, कुरान तुम्हीं इतिहास तुम्हीं हो
छात्र हैं लीडर आज सभी, करते उन्हें फेल या पास तुम्हीं हो
होता अजीर्ण है विश्वको किन्तु किया करते उपवास तुम्हीं हो।

× × ×

बापू, तमाशा किया यह खूब, जरा अब राष्ट्र की हैंडिल मोड़ो
खूब अहिंसा पढ़ाई हमें यह, जो तुम्हें मारे उसे कर जोड़ो
चर्खा चला कर बन्द करो मिल, नून बनाके कानून को तोड़ो
छोड़ चलेगी गुलामी हमें मुँह से कहते रहो—'भारत छोड़ो !'

× × ×

फैशन, फूट फ़रेब की नींद से छात्र - गणों को जगा दिया है
और जगा करके उन को छुआ-छूतका भूत भगा दिया है
नारे लगा कर लीडरी का यदि जोश नया उमगा दिया है
तो उसी संग पिकेटिंग का, हड़ताल का रोग लगा दिया है।



पिछली लड़ाई के जमाने में किया गया



अपने नाना को नमस्कार
अपनी नानी को नमस्कार
सबसे पहले मैं करता हूँ
हिन्दुस्तानी को नमस्कार।

दुनिया दहलाने वाले
जापानी टापू को नमस्कार।
नित खुराफात रचनेवाले
अपने बापू को नमस्कार

जिसके भयके कारण करते
जापानी हमको नमस्कार
मैं डर डर करके करता हूँ
उस एटम बमको नमस्कार।

अब बिना लड़े ही युद्ध खतम—
करन वालों को नमस्कार।
यह समाचार सुन करके ही
डरने वालों को नमस्कार।

जो नाच नचाती पतियों को
है उन सतियों को नमस्कार
जो स्वयं बना करते सतियाँ
है उन पतियों को नमस्कार ।

जो कभी न पिघला या दहला
उस पत्थर-दिलको नमस्कार
चें-चें करनेवाले उस चुप
चाचा चर्चिल को नमस्कार ।

जो हमें डुबाने वाली थी
उस भ्रष्ट तरी को नमस्कार
अब मुँह न दिखा सकनेवाले
मिस्टर एमरी को नमस्कार ।

जो साँस न लेने देता है
अब उस शासन को नमस्कार
जो कभी न भरता पेट अरे
अब उस राशनको नमस्कार !

जिसमें फँस कर निर्बल होते
अब उस दलदल को नमस्कार
नेताओं का मन बहलाने–
वाले वेवल को नमस्कार ।

जो बने लड़ाई में अमीर
उन सब बनियों को नमस्कार
जो सदा दिवाला बोल रहे
उन सब धनियों को नमस्कार ।

जिस चौताले पर नाच रहे
उस धिक-धिन्ना को नमस्कार
अपने मन की करनेवाले
मिस्टर जिन्ना को नमस्कार।

जो रुपयों के बल मिल जाता
ऐसे प्रभावको नमस्कार,
जिसमें हरदम हो मारपीट
ऐसे चुनाव को नमस्कार।

जो मौज उड़ाया करते हैं
उन बेकारों को नमस्कार
जो सच्ची खबर नहीं देते
उन अखबारोंको नमस्कार।

जो लेख चुराकर छपवाता
है उस लेखक को नमस्कार
जो पुरस्कार देता न कभी
उस सम्पादक को नमस्कार।

जिसमें खटमल नित वास करें
उस फरनीचर को नमस्कार
जो रात-रात कविता पढ़ता
उस रजनीचर को नमस्कार।

है कभी नहीं करता कोई
जिन जिन रोगों को नमस्कार
बेधड़क आज मैं करता हूँ
उन सब लोगों को नमस्कार।





[अंग्रेजी शासन के जाने पर अवसरवादियों का स्वर]

मैं समझ नहीं यह पाता हूं, किसलिए बदलता जाता हूँ!

कल तक था पूरा अपटूडेट
पहना करता था सूट नवल
पर आज पहनता खादी का
लम्बा कुर्ता, धोती, चप्पल

अब गाँधीवादी हूँ, उस धारा में ही पलता जाता हूँ।

कल तक इन खद्दरवालों से
डरता था, रखता था डंडा
पर अब घर की छत पर ऊँचे
फहराया करता है झंडा

अब जब-जब होती सभा कहीं, मैं वहीं उछलता जाता हूँ।

थे ब्रिटिश नरेशों के लटके
जिस जगह पुरातन जीर्ण चित्र
अब तो उस जगह विराज रहे
गाँधी पटेल नेहरू पवित्र
क्या कहूँ, चले दुनिया जैसे वैसे ही चलता जाता हूँ।

कल तक था पूरा राजभक्त
कहता था जिनको जी-हुजूर
पर आज न जाने क्यों उनसे
डर कर रहता हूँ दूर-दूर
इतना ही क्यों, उनके खिलाफ कुछ आग उगलता जाता हूँ।

कल तक तो यही समझता था
क्या कर लेगी यह कांगरेस
पर हाय, हुआ सब कुछ उलटा
लग रही ठेस पर आज ठेस,
पहले था मैं बिलकुल ठंडा अब कुछ-कुछ जलता जाता हूँ।

कल तलक लाट साहब का मैं
था परम भक्त, उनका बन्दा
पर आज बन रहा कांग्रेसी
दे चुका चवन्नी का चन्दा।
मिल रही बेधड़क आज मुझे जिस ओर सफलता जाता हूँ।



यह भ्रष्टाचार खोजने को
जो खुला आज नूतन विभाग
क्या कर लेगा, मैं देशभक्त
मुझ पर न लगेगा एक दाग

देखो, इसके फन्दे से मैं अब साफ निकलता जाता हूँ।

गाँधीजी जियें जियें नेहरू
साथ ही लीडरी आज जिये
जिसके बल पर मेरे जैसा
नर भी सुख से नित चाय पिये।

पर जब मैं 'जय जय' कहता हूँ अपनेको छलता जाता हूँ।
मैं समझ नहीं पाता हूँ किसलिए बदलता जाता हूँ।







[बादल के प्रति युग की पुकार]

तुम ऊपर से क्या गरज रहे, यदि हिम्मत हो नीचे आओ,
आ गयी क्रान्ति की बेला अब, यदि सहमत हो नीचे आओ।

तुम अन्धी आँखों पर बरसो
तुम टूटे पाँखों पर बरसो
आहों की राहों पर बरसो
इन शाहंशाहों पर बरसो

तुम पेट, पीठ, सर पर बरसो, बाहर बरसो भीतर बरसो
पानी बरसो, पत्थर बरसो, जो कुछ बरसो जी भर बरसो।

उन पैण्ट कमीजों पर बरसो
इन मँहगी चीजों पर बरसो



चीजों के भावों पर बरसो
भावों के घावों पर बरसो

गल्ले के बोरों पर बरसो, बोरों के स्टोरों पर बरसो,
स्टोरों के चोरों पर बरसो, उन काले गोरों पर बरसो।

इस अद्भुत शासन पर बरसो
गेहूँ के राशन पर बरसो
उनके वक्तव्यों पर बरसो
उनके कर्त्तव्यों पर बरसो

क्या कहूँ तुम्हें किस पर बरसो, सप्लाई आफिस पर बरसो,
आफिस की घिस-घिस पर बरसो, बस 'टाँय-टाँय फिस' पर बरसो।

सेठों धनवानों पर बरसो
स्थायी मेहमानों पर बरसो
उनके गोदामों पर बरसो
उन मोटे चामों पर बरसो

बेढंगे थानों पर बरसो, झूठों बेइमानों पर बरसो,
फिल्मों के गानों पर बरसो, पाजी शैतानों पर बरसो।

काशी की सड़कों पर बरसो
आवारा लड़कों पर बरसो
इन नगर-पिताओं पर बरसो
अथवा अबलाओं पर बरसो

उनके एकोऽहम् पर बरसो, उनके ऐटम बम पर बरसो,
बरसो अपने दम पर बरसो, दुनिया के मातम पर बरसो।



दिल्ली या लन्दन पर बरसो
हँस हँस कर क्रन्दन पर बरसो
नर की असफलता पर बरसो
घर की दुर्बलता पर बरसो

बादल काले-काले बरसो, निज धुन के मतवाले बरसो,
तुम नयी योजना ले बरसो, तुम नयी चेतना ले बरसो।







[विदेशी शासन में]

आज बेधड़क पीछे पीछे कायर आगे-आगे

आज न उनकी पूछ, बनेंगे जो अब बिल्ली भींगी
आज न उनकी पूँछ, रहे जो अबतक कभी न सींगी ।
आज उन्हीं की पूछ, करेंगे जो नित धींगाधींगी
आज उन्हीं की पूछ, बनेंगे जो अब संघी लीगी ।
कांग्रेसी से तो अब बढ़ कर जिन्ना, जोशी, डाँगे ।
आज बेधड़क पीछे-पीछे, कायर आगे आगे ।।

× × ×

आज न उनमें कुछ ताकत है जो पीते हैं जूस ।
आज न उनमें कुछ भी बल है जो हैं मक्खीचूस ।
आज उन्हीं का काम निकलता जो दे सकते घूस ।
शक्ति उन्हीं के पास कि जो लेते औरों का ठूस ।



चोर महाजन बने घूमते मस्त साँड़ ज्यों दागे।
आज बेधड़क पीछे-पीछे, कायर आगे आगे ॥

× × ×

वह कूपन लेने को जब मैं पहुँचा उस दूकान,
डटी भीड़ थी वहीं, कुंभ पर ज्यों हो गङ्गास्नान।
खड़ा रहा दो घंटे, फिर मैं घुसा लिये कर प्रान
घुस न सका पतलून फट गया, यह क्या रे भगवान।
टिकट कहाँ, दिल विकट हुआ, घर आया भागे भागे।
आज बेधड़क पीछे-पीछे, कायर आगे आगे ॥

× × ×

शासन की यह हालत रहती रोज कुछ न कुछ गड़बड़
राशन की यह हालत आधा गल्ला आधा कंकड़
साधारण लोगों की इज्जत गयी खटाई में पड़
जब कि असाधारण अफसर ही खा जाता है थप्पड़।
दिन क्या हाय, रात भी कटती है अब जागे जागे।
आज बेधड़क पीछे-पीछे, कायर आगे आगे ॥

× × ×

एक मुसीबत हो तो उससे ताल ठोंक लड़ जावें
एक चीज की अगर कमी हो तो लड़-भिड़ कर पावें।
एक मुनाफाखोर अगर हो तो उसको पकड़ावें,
यहाँ कुएँ में भाँग पड़ी है पीवें सभी पिलावें।
फिर भी यह निर्लज्ज बना नर अपने प्राण न त्यागे।
आज बेधड़क पीछे-पीछे, कायर आगे आगे।

× × ×

वह राशन दें तो हम खायें आज पेट भर रोटी
वह 'परमिट' दें तभी पहन सकते हम आज लँगोटी।
उनके आर्डर पर तकदीर खरी बन जाती खोटी
वह 'परमिट' दें तो हम मिट जावें कटवा दें चोटी।
परमिट देनेवाला लेकिन खुद परमिट अब माँगे,
आज बेधड़क पीछे-पीछे, कायर आगे-आगे।





एक समय---लड़ाई के जमाने में ऐसा भी था जब---

मिल न सका मिट्टी का तेल

रहा अँधेरा छाया घर में देखो, हाय भाग्य का खेल
लिख न सका कविता भी अपनी, मिल न सका मिट्टी का तेल !
हुए 'फ्यूज' बिजली के लट्टू, उनका भी मिलना दुश्वार,
कहा श्रीमती ने---'जाकर अब ले आओ मिट्टी का तेल।'

उठा, चला, बोतल ले पहुँचा उस दुकानवाले के पास,
देखा वहाँ एक जमघट है, मची हुई है ठेलम-ठेल !
सबके हाथों में बोतल थी, नर-नारी बालक का झुण्ड
पढ़े-लिखे कुछ दुबले-मोटे लम्बे-नाटे सबका मेल।

मेरे जैसे सभ्य बने कुछ खड़े दूर से ही लाचार,
करते आलोचना विवश थे—देखो गह कैसा है 'सेल'।
सधे-बधे परिचित मुस्तण्डे तो घुस जाते थे बे-रोक,
और सावजी मोटे थुल-थुल बैठे थे जैसे हो खेल।

सब की शकल देखते थे वह और 'अकल' का कर उपयोग,
अपने नपुए से बोतल में मनमाना थे रहे उँड़ेल।
चिर-परिचित थे वह मेरे, पर आज बने बैठे अनजान,
फिर भी इस विचित्र पक्षी पर मेरी आँखें बनीं गुलेल।

सोच-समझ कर निज दुर्बलता, मैंने आव न देखा ताव,
फेंटा कसकर चला भीड़ में जैसे नेता जाते जेल।
जिस गति से मैं घुसा भीड़ में उसे देख कर थे सब स्तब्ध,
अगर प्रेमिका होती कोई देती मुझ पर स्नेह उँड़ेल।

पहुँच दुकानदार के सम्मुख कहा—'सावजी दे दो जल्द।'
वह झट् बोले—'टिकट लाइये', वह सुनकर मैं था बे-मेल।
'टिकट! टिकट कैसा यह भाई?' 'अरे टिकट तेल का पास!'
'टिकट, विकट है, एक समस्या, क्या यह भी है कोई रेल?'



हँस बोला वह, 'हुकुम यही है कैसे तोड़ें इसे जनाब !
घुरहू तेली उस पटरी पर बेचा करता इत्र-फुलेल,
वही बाँटता पास-वास है'....सुनकर मैं यह हुआ उदास,
पीछे से धक्के लगते थे, 'हार्ट' इधर होता था फेल।

'आधी ही बोतल दे दो तुम, जैसे हैं ले गये अनेक,
सोचो, भाई द्वार तुम्हारे आया हूँ प्राणों पर खेल।'
'हटिये, बढ़िये, पाँच बज गया, अब दुकान करनी है बन्द'
कहकर वह भीतर घुस बैठा, गोया हो जनरल रोमेल !

किसी तरह उस साँसत-घर से निकला बाहर बना उदास,
डिग्री लेने में भी ऐसी सका न था मैं आफत झेल।
पढ़ना-लिखना, सम्पादक बनना सब कुछ है अब बे-काम,
सिविक-गार्ड ही बन जाता तो, क्यों होता ऐसा बदफेल।

'एमरी' को कर याद तुरत मैं पहुँचा फिर घुरहू के पास।
सोचा—उस दूकानदार की होगी इसके हाथ नकेल।
वह बोला झट् मुँह बिचकाकर—'पास नहीं अब मेरे पास।'
हठी बना था जिन्ना-सा वह, उसका हृदय बना था बेल।

'असफल क्रिप्स' बना मैं लौटा, अंधकार था चारों ओर,
लेटा सूने घर में आ 'भारत-रक्षा' का ठेला ठेल।
हँसकर बोला—'मेरे घर में प्रिये, बनो तुम ही आलोक !'
'घत्' कहकर जीवन-संगिनि ने मुझको फौरन दिया ढकेल ॥





संकेत किया आँखों से
जब स्थूल सभापति बोले
सहसा कविजी नागिन-सी
लम्बी अलकों को खोले,

जलपान पेट में भर कर
मुखमें कुछ पान जमाये।

वह चले मञ्च पर जैसे
कोई नव-युवती डोले।

जब रूप-सुधा पीने को
लोगों ने आँखें खोलीं;
गूँजी कवि-सम्मेलनमें
लो 'पढ़ो-पढ़ो' की बोली।

थी अर्द्ध-रात्रि की बेला
गूँजा कवि का गर्दभ-स्वर
तब काँव-काँव कर कौवे
निकले नीड़ों के बाहर।

गूँजा पण्डाल हँसी से
कवि ने पानी जब माँगा।

दस-पाँच बार जल घोंटा
दो-तीन मिनट के भीतर।

खलबली मची जनतामें,
लोगों की जिह्वा डोली;
गूँजी, कवि-सम्मेलनमें
लो 'हलो-हलो' की बोली।

× × ×

कुछ खाँस-खूँसकर कवि ने
यों श्रोताओं को घूरा
मूँड़ने चले हों मानो
लेकर कविता का छूरा।

कोमल शरीर लचका कर,
कुछ हाव-भाव दिखला कर,

कविता पढ़ने का आमुख
इस भाँति किया कुछ पूरा।

श्रोताओं ने यह समझा
इनकी कविता तो हो ली;
गूँजी कवि - सम्मेलनमें,
लो 'कहो-कहो' की बोली।

सबने तालियाँ बजायीं,
मच गया शोर-गुल भारी;
हिल गये सभापतिजी खुद,
करते क्या, थी लाचारी।

जनता को यों चिल्लाते
कवि ने देखा, यह समझा—
'कविता पसन्द आयी है
लोगों को खूब हमारी।'

यह समझ लगे फिर पढ़ने
घोली कुनैनकी गोली,
गूँजी कवि - सम्मेलनमें
लो 'चलो-चलो' की बोली।

× × ×

भूकम्प मचा था काफी
फिर भी हुए न दस से मस।

यह देख विकट आन्दोलन
कह उठे सभापतिजी—'बस' !
लाचार हुए उठ बैठे
कविजी निज दर पर लौटे।

फिर जम न सका सम्मेलन,
हो गया काव्य रस चौरस।
फिर 'वाह-वाह'-हा-ही-हू
करते थे लोग ठिठोली;
गूँजी कवि - सम्मेलनमें
लो 'अहो-अहो' की बोली।

× × ×

जब किसी तरह यह न्यारा,
था खतम हुआ सम्मेलन;
धीरे-से दर्शक घिसके,
बच गये वहाँ बस कविगण।
स्वागत - मन्त्री भी ऐसे
गायब थे जैसे गेहूँ।
कवियों के हृदय - तवे पर
पानी करता था सन-सन।

सब लगे खोजने उनको
ले अरमानों की झोली;
गूंजी कवि - सम्मेलनमें
लो 'धरो-धरो' की बोली।





आयी है पतझड़ की बेला इसको कृपया मधुमास करो !
करती हूँ घर का बजट पेश प्रियतम, तुम इसको पास करो !!

सरकारी बजट अभी उस दिन
देखा तुमने कितना चोखा !
उसमें घाटा ही घाटा सुन
हो जाता है हमको धोखा।
तुम शान्त चित्त से बैठ यहाँ
लो चाय पियो जलपान करो,
अब पेश कर रही हूँ मैं भी
अपने घरका लेखा-जोखा।

धीरज धर कर तुम सुनो इसे बेकार न तुम बकवास करो !
करती हूँ घरका बजट पेश प्रियतम, तुम इसको पास करो !







है आय यही प्रति माह तुम्हें
मिलते सौ रुपये वेतन से,
कुछ इधर-उधर से लिख-लुखकर
तुम कमा सकोगे ट्यूशन से।
कुछ मिल जायेगा बन्दों से
कुछ मिल जायेगा चन्दों से
दस-पाँच बचा लोगे ही तुम
मिलता जो कवि-सम्मेलन से।
हरदम तुम थोड़ा काम करो, मत खेला अब तुम तास करो!
करती हूँ घर का बजट पेश प्रियतम, तुम इसको पास करो!!



फाइलें पुरानी बेच-बेच
हम पायेंगे पैसे काफी,
बेचने यदि इन अखबारों को
ये लायेंगे पैसे काफी।
अपनी कविताओं का बंडल
गुदड़ी में यदि तुम बेच सको,
सच कहती हूँ इससे भी अब
मिल जायेंगे पैसे काफी।
कुछ और आय हो जाय अगर रजनी में छीला घास करो!
करती हूँ घर का बजट पेश प्रियतम, तुम इसको पास करो!!







इस वर्ष सुनो कमसे कम मैं
सोलह साड़ियाँ मँगाऊँगी।
दो सैण्डिल और चार चप्पल
आर्डर देकर बनवाऊँगी।
दस जम्पर और आठ ब्लाउज
बोलो, इनसे कम क्या होगा;
सोने की नेकलेस बिना कहो
मुँह कैसे भला दिखाऊँगी।
यह कम से कम मेरा भत्ता मुझ पर न कृपा तुम खास करो!
करती हूँ घर का बजट पेश, प्रियतम, तुम इसको पास करो!!



बिट्टी की शादी करनी है
लल्लू का मुण्डन करना है,
जो हुआ जनेऊ कल्लू का
उसका भी कर्जा भरना है।
यह नौ हजार का खर्चा है
इसमें न कटौती हो सकती;
हाँ, यह मकान मालिक भी तो
देता रहता नित धरना है।
ये सारे काम जरूरी हैं मत चेहरा अभी उदास करो।
करती हूँ घर का बजट पेश, प्रियतम, तुम इसको पास करो।



दो सौ सिनेमा का व्यय रक्खो
सौ रुपये हुए सवारी के।





हैं नून तेल लकड़ी के सौ,
चालिस मद्धे तरकारी के।
कुछ दोस्त तुम्हारे आते हैं
मेरी सखियाँ भी आती हैं;
इन लोगों की मेहमानी में
कम से कम सौ लाचारी के।
कम खाने का गम खाने का लेकिन अब तुम अभ्यास करो!
करती हूँ घर का बजट पेश, प्रियतम, तुम इसको पास करो!!



दर्जी के बीस सिलाई के
धोबी के बीस धुलाई के।
है दो आना कम दो रुपया
बाकी बिस्सू की माई के।
है पास तुम्हारे सब कुछ तो
कपड़े भी हैं जूते भी हैं,
फिर भी यह पन्द्रह रुपया लो
तुम कोट बूट नकटाई के।
यह है पचास का तखमीना इसको न अभी उनचास करो!
करती हूँ घर का बजट पेश, प्रियतम, तुम इसको पास करो!!



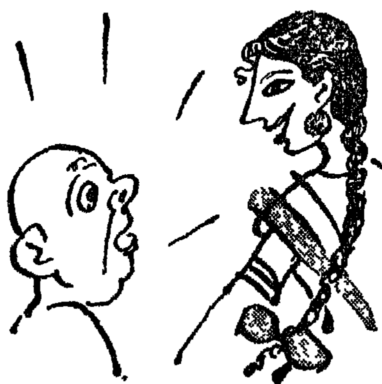
'क्या कहूँ तुम्हें प्रेयसि, बोलो,
बेधड़क हुआ गीला आटा।
यह युद्ध हुआ जाता लम्बा
जीवन होता जाता नाटा।



तुमने तेरह सौ आय और
चालिस सौ का है व्यय कूता,
जो बजट पेश करती हो तुम
उसमें है घाटा ही घाटा।

क्यों नहीं साफ कहती हो यह प्रियतम, मेरे उपवास करो,
करती हूँ घर का बजट पेश, तुम नयन बन्द कर पास करो।





तुम और मैं !

तुम ट्यूब और मैं टायर

तुम वेद वाक्य का गान मधुर मैं हूँ बेधड़क सटायर
तुम मक्खन सी सुन्दर सफेद, मैं च्यवनप्राश हूँ काला
तुम नमक सुलेमानी समधुर, मैं भी हूँ गर्म मसाला



तुम हैट और मैं पग्गड़

तुम लैण्डो बग्घी शानदार, मैं ईंटों वाला सग्गड़।
मैं मोटा ताजा कटहल हूँ, तुम कोमल कोमल ककरी
मैं लिनलिथगो का साँड़ और तुम गाँधीजी की बकरी।



तम दुबली हो, मैं मोटा

तुम सुघर चाय की प्याली हो, मैं बेपेंदी का लोटा।
मैं भारी कोंथरा टाट और तुम जार्जेट साड़ी झीनी
मैं गुड़हट्टे का गुड़ सस्ता, तुम हो बलिया की चीनी।

तुम गगरी हो, मैं कुंडा

तुम लम्बी वेणी वाली हो, मैं ब्राह्मण हूँ सिर-मुंडा।
मैं अटपट क्षीण बुढ़ापा हूँ तुम रसमय मधुर जवानी
मैं चन्द्रबली पाँड़े सुन्दर तुम भाषा हिन्दुस्तानी



तुम चौका हो मैं बेलन

तुम हो मुशायरा नाजुक तो मैं फक्कड़ कवि-सम्मेलन।
मैं हिन्दू-मुस्लिम मेल और तुम दंगे की आशंका;
मैं हूँ कोयले की खान और तुम हो सोने की लंका।



तुम धारा हो मैं तरखा

तुम कोमल कर की तकली हो, मैं हूँ बुढ़िया का चरखा।
मैं हूँ लकड़ी का टाँड़ और तुम हो लोहे की गाटर,
मैं मटमैला-सा सूरन हूँ, तुम हो प्रिय सुर्ख टमाटर।



तुम तितली मैं चमगादर

तुम सुन्दर कमसिन मिस उदार, मैं दो बच्चोंका फादर।
मैं नालन्दा का खँडहर हूँ तुम हो रसमय वृन्दावन,
मैं प्रलयंकर की वक्र दृष्टि, तुम वक्र रसीली चितवन।



तुम मोर-पंख मैं डैना

तुम बच्चन की मधुबाला हो, मैं किस्सा तोता-मैना।
मैं भारत का काला साहब, तुम सुघर मेम हो गोरी,
मैं सनका मोटा रस्सा हूँ, तुम हो फाँसी की डोरी।



तुम क्लीनशेव्ड मैं दढ़ियल

तुम ताजी गर्म कचौड़ी हो, मैं बासी हलुआ सड़ियल।
यौवन की इस चटशाला का मैं ब्लैकबोर्ड तुम खरिया,
इस जीवन-छप्पर के दोनों मैं थपुआ हूँ तुम नरिया।



वह खड़ा नारी-सदृश



है मिली सुन्दर निराली छवि जिसे
रात भाती है न भाता रवि जिसे
बाप-माँ की नजर में बेकार जो
और दुनिया कह रही है कवि जिसे
वह खड़ा नारी-सदृश नर देख लो।

काव्य का पीछा नहीं जो छोड़ता
टाँग भावों की हमेशा तोड़ता
और लेकर वह कुल्हाड़े की कलम
बेतुके तुक जोड़ता, घट फोड़ता
वह खड़ा है आज शायर देख लो।

बात करता सभ्य शिष्टों की तरह
लोकयुग के चार पृष्ठों की तरह
और जिसकी है दिखाई पड़ रही
रूप-रेखा कम्युनिस्टों की तरह,
वह खड़ा सम्मुख शनीचर देख लो।



साथियों से मार खाता जो रहा
और घर से भाग जाता जो रहा
भाग्य की तारीफ उसके क्या करूँ
रातदिन जूते चुराता जो रहा
बन गया है आज अफसर देख लो।

रूप-वाणी में विकट कौवा बना
लुढ़कता है क्लास में लौवा बना
आदमी वह पायजामा की तरह
और लड़कों के लिए हौआ बना
वह खड़ा है क्लास-टीचर देख लो।

टूटता वह इस तरह जलपान पर
जिस तरह परमाणु बम जापान पर
और भोजन के समय की बात क्या,
क्यों न घर बिक जाय इस मेहमान पर,
वह खड़ा भूधर वृकोदर देख लो।

भार ढोने में यशस्वी बन गया
कुछ न कहता है, मनस्वी बन गया
पाठ है उसने अहिंसा का पढ़ा
साधना करके तपस्वी बन गया
वह खड़ा है सामने खर देख लो।

बात निकली आज सब भूली जिसे
समझते थे हाय मामूली जिसे
पात चिकने लाल उसके हो गये
जानते थे साग औ मूली जिसे—
बन गया है वह टमाटर देख लो।

लोग कहते थे जिसे बेकार है
और घर के वास्ते यह भार है
आज उसकी पूछ देखो बढ़ गयी,
लग रहा उसके यहाँ दरबार है,
वह खड़ा है आज लीडर देख लो।

*

तुम्हारे भोजन को जजमान!



तुम्हारे भोजन को जजमान पेट है कुण्डा आलीशान

किसने इसको नापा-जोखा
रंग सदा है इसका चोखा,
देखा इसका ढंग अनोखा
जो पाया सब इसने सोखा,

भीम बड़वानल सदृश उदार,
ठूँस लेता सारा पकवान।



सारी दुनिया इसमें रहती
सारी दुनिया इसमें बहती
सारी दुनिया इसमें दहती,
सारी दुनिया इसको कहती—

'विश्वपर पानेवाला विजय
यही है नेपोलियन महान!'



इसके पीछे आज लड़ाई
इसके पीछे आज कड़ाई
इसके पीछे हाथा-पाई,
इसके पीछे सभी बुराई,
इसी से होता विप्लव आज,
इसी का कवि करते गुण-गान।



इसको जो कर देगा पूरा
इसको जो भर देगा पूरा
इसको जो स्वर देगा पूरा
उसको ईश्वर देगा पूरा,
यही है कथन हमारा सत्य,
न मानो कर लो अनुसन्धान।



बन्दा अप-टू-डेट नहीं यह
सबको करता हेट नहीं यह,
जेण्टिलमेनी पेट नहीं यह
खाता इक-दो प्लेट नहीं यह,
'पारटी' 'एट-होम' हो जहाँ,
उड़ाता मन भर का सामान।



अपनी पूरी भक्ति लगाकर
अपनी पूरी शक्ति लगाकर
श्रद्धा से अनुरक्ति लगाकर,
भोजन में आसक्ति लगाकर,

अतिथि समझकर मुझे विराट्
करा दो ना, मुझको जलपान।

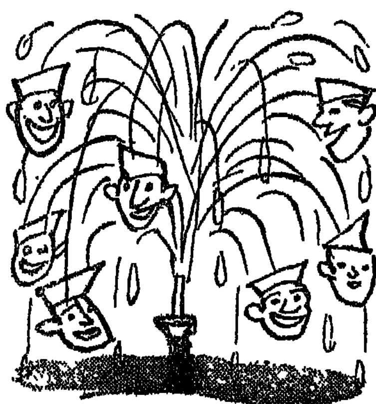
☆

मुख-गह्वर से ठूँस-ठसा लूँ,
जो लाओ सब आज उड़ा लूँ,
हफ्ते भर की कसर निकालूँ,
ले डकार परमार्थ बना लूँ,
तुम्हें दूँ फिर यह आशीर्वाद—
तुम्हारा भला करे भगवान्!

✶

राशन का कुछ मोल न होगा
खाने पर 'कण्ट्रोल' न होगा
जीवन डाँवा-डोल न होगा,
फूलेगा भूगोल न होगा,
मिला है; बहुत दिनों के बाद,
मुझे अवसर यह आज महान्।

★



स्वदेशी प्रदर्शनी में

कविजी तुमने क्या-क्या देखा ?[1]
फाटक के भीतर घुसते ही झरझर निर्झर झरते देखा।
था अजब समाँ, सब ओर शमा, 'परवानों' को मरते देखा।।

× × ×

काली, पीली, नीली, सफेद जार्जेट की साड़ी की बहार!
मेरे मोटे से कम्बल में घुस आया जाड़े का बुखार।
पर, क्या इन कोमलांगियों से हे शीत देवता, गये हार!

जेण्टिलमैनी औ' मैनों को,
सिमटाये अपने डैनों को,

'पाकेट' के भीतर हाथ दिये थरथर-थरथर करते देखा।
फाटक के भीतर घुसते ही झरझर निर्झर झरते देखा।।

× × ×

---

१ एक बार सन् ३९-४० के जाड़े में कांग्रेस की ओर से विराट् स्वदेशी प्रदर्शनी हुई थी, उसी को देख कर लिखी गयी कविता।



कांग्रेस-नुमाइश में खादी की एकमात्र बस थी दुकान;
साबुन-बट्टी, ऐना, कंघी, पौडर, वेसलीन, शृंगारदान—
बाबू से ज्यादा बबुआइन के लिए यहाँ बिकता सामान;
क्या काम यहाँ तक आने का,
मतलब बस दिल बहलाने का।
काशी की नयी पँचकोसी का सौ-सौ चक्कर करते देखा।
फाटक के भीतर घुसते ही झरझर निर्झर झरते देखा।।

× × ×

विद्युत की छटा, सब तिमिर हटा, शत-शत 'बल्बों' का नव-प्रकाश
इस सर्दी में घोंसला छोड़ कर दिया उलूकों ने प्रवास,
आनन्द कहीं, अफसोस कहीं, कोई खुश है, कोई उदास।
है मुश्किल सबको खुश करना,
नामुमकिन सबका मन भरना।
पर बिजली के मैनेजर का पूरा पञ्जा 'घी' में देखा।
फाटक के भीतर घुसते ही झरझर निर्झर झरते देखा।।

× × ×

कालेज से निकले नौजवान, ये 'वरसीटी' के रङ्गरूट
नखशिख तक देशी खद्दर के डाटे 'लन्दन' के सिले सूट;
ओवरकोटों के भीतर से गर्दन उचकाये बने ऊँट
आँखों की प्यास बुझाने को,
निज दिल की भूख मिटाने को,
टाउनहाल की मृदुल घास धीमे-धीमे चरते देखा।
फाटक के भीतर घुसते ही झरझर निर्झर झरते देखा।।

× × ×

आहें भरनेवालों के हित आतिशबाजी का घनानन्द,
कुछ भूखे मरनेवालों के दिल बहलाने का सुप्रबन्ध,
घर-फूँक तमाशा दिखलाओ हम देखेंगे कर नजरबन्द;

सब कहते हैं यह मेला है,
मैं भी कहता, अलबेला है।

दिल का, मन का, औ' आँखों का सबने अजीब मेला देखा।
फाटक के भीतर घुसते ही झरझर निर्झर झरते देखा॥

× × ×

फैशन की गङ्गा में धोने सब अपना अपना हाथ चले,
कुछ अलग किये श्रीमतियों को, कुछ लेकर अपने साथ चले,
कुछ उनके संग शरमाये-से कुछ होकर पुलकित गात चले;

मैं रहा देखता अलबेला
'पतियों'-'श्रीमतियों'का मेला

ले चलीं गोद में गुब्बारे शिशुओं का अवहेला देखा॥
फाटक के भीतर घुसते ही झरझर निर्झर झरते देखा॥

× × ×

शायरों और कवियों को भी अपना दिल बहलाते देखा,
होटल में कांग्रेसी-ब्राह्मण-नेताओं को खाते देखा,
साम्यवाद को खेमें में नाचते और गाते देखा;

कुछ कलाकार आपस में मिल
बस फूँक रहे थे अपना दिल।

संयोजकजी को लाउडस्पीकर पर बस चिल्लाते देखा।
फाटक के भीतर घुसते ही झरझर निर्झर झरते देखा॥

× × ×

हँसते देखा, रोते देखा, बेधड़क वहाँ गाते देखा,
बस तेली के बैलों-सा लोगों को चक्कर खाते देखा,
उन छोटी-बड़ी सूइयों को जब बारह पर जाते देखा;
तब घर जाने की याद हुई,
यह रात सफल बरबाद हुई,
दिल अपना चकनाचूर किये फाटक बाहर आते देखा।।

× × ×

फाटक के भीतर घुसते ही झरझर निर्झर करते देखा।
था अजब समाँ, सब ओर शमा, परवानों को मरते देखा।।





मुझसे बेड़ा पार न होगा

उस नेता से मेरा नाता,
मुझे यही कह कर बहकाता—
'पढ़े चलो बेटा, तुम कसकर डिप्लोमा बेकार न होगा।'

×

दर-दर घर-घर भटक रहा हूँ,
जीवन-पथपर अटक रहा हूँ,
'वाण्टेड' जिसका पढ़ा न हो कोई ऐसा अखबार न होगा।

×

बीवी - बच्चे नाती - पोते
सदा मुझे रहते हैं जोते,
मैं कहता मेरे जैसा रावण का भी परिवार न होगा।

×



लाठी लेकर दौड़े बीबी,
अथवा हमला कर दे टी. बी.
बिना प्रेम के जी लूँगा पर मुझसे ऐसा प्यार न होगा।

×

दफ्तर में इतनी कविताएँ,
आती हैं इतनी रचनाएँ,
जितना अरे म्युनिसपलटी का भी कूड़ा-कतवार न होगा।

×

महँगी है, शृंगार करूँ क्या,
तंगी है, व्यापार करूँ क्या,
जब सब कुछ मेरा ही होगा पर मेरा अधिकार न होगा।

×

जीवन की जर्जर है तरणी,
कैसे पार करूँ वैतरणी,
अरे, गाय क्या गदहे की भी दुम का जब आधार न होगा।





जब मैं नेता बन गया, सखे !

उस दिन नेता बनकर मैंने
सबसे पहला यह काम किया,
छपने को सब अखबारों में
मैंने लंबा वक्तव्य दिया—

"मैं जनता का सच्चा सेवक, मैं राष्ट्रधर्म का मानी हूँ।"

मैं मोटर पर होकर सवार
तूफानी दौरा करता हूँ;
मजदूर-किसानों का साथी
बनने का दम मैं भरता हूँ

पर उनसे भी चन्दा लेता, करता न कभी नादानी हूँ।



भाषण देने के वक्त सखे,
मैं मनमाना चिल्लाता हूँ;
मैं रह-रह कर खाँसा करता
जब बोल नहीं कुछ पाता हूँ।

यों ठहर-ठहर कर बार-बार थोड़ा-सा पीता पानी हूँ।

मैं तो केवल हूँ मिडिल फेल,
इससे फिर भी अनजान नहीं;
मैं शब्द अनूठे कहता हूँ,
हो भले अर्थ का ज्ञान नहीं।

हिन्दी-उर्दू का झगड़ा क्या, मैं बकता हिन्दुस्तानी हूँ।

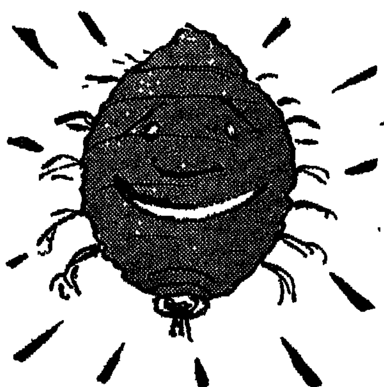
यों मैं नेता बन गया सखे,
पद-विक्रेता बन गया सखे,
गिरगिट-सा रंग बदलता हूँ,
पटु अभिनेता बन गया सखे।

ये अंधभक्त क्या समझेंगे, मैं कितना कारस्तानी हूँ।

बाहर है पूरा ठाट-बाट
पर घर में भूँजी भाँग नहीं,
मुसलिम लीगी माँगों से तो
है कम बीवी की माँग नहीं।

घर में तो घरवाली का हूँ, बाहर मैं गति मर्दानी हूँ।

★



हम हैं खटमल, हम हैं खटमल

रक्तिम है तन, रक्तिम है मन
रक्तिम है यह सारा जीवन
रक्तिम है जीवन का गायन
रक्तिम है जीवन का क्रन्दन।
हैं कभी कठिन, हैं कभी सरल,
हम हैं खटमल, हम हैं खटमल।

जो सुन लोगे यह आत्म-कथा
तो गुन लोगे तुम मधुर व्यथा,
तुम इसे प्रकाशित कर दोगे
इसका हमको कुछ पता न था।
अखबारों में हम घुस बैठे;
यह आज देख हो गये विकल।

मत अधम-अछूत हमें समझो
रावण का पूत हमें समझो
यम के वैदेशिक मंत्री का
भारत-स्थित दूत हमें समझो।

हम सदा मूक वक्तव्यों से—
हैं मचा दिया करते हलचल।

शोणित से पैदा हम होते
हम रक्तबीज के हैं पोते
हम उन्हें जगाया करते हैं
जो रहते हैं हरदम सोते।

फिर भी मिलज्ज दुनियावाले
करते रहते हैं कोलाहल।

मानवी रक्त के हम शोषक
साम्राज्यवाद के हम पोषक
हम कहाँ नहीं, तुम देखो तो
कुर्सी, टेबुल, तकिया, तोशक,

खटिया, मचिया, कालर, कमीज
हर दरपर हम बसते प्रतिपल।

जीवन-संग्राम किया करते
हम सच्चा काम किया करते
जो तंग हमें करते, उनकी
हम नींद हराम किया करते।

रजनी की नीरव बेला में
नित होता रहता है दंगल।

सब कहते यही—काल सेना
यह महा कठिन कराल सेना
लोगों के खटिया-बिस्तर पर
चल पड़ती जभी लाल सेना।

जमकर मोरचा लेनेवाले
हम हैं मार्शल, हम हैं जनरल।

हम सदा काटते हैं कावा
हम लुक-छिप बोल रहे धावा
हम दुर्बल क्रांति मचा देंगे,
बस यही हमारा है दावा।

नित हाहाकार मचाते हैं—
हम सैनिक छापामार प्रबल।
हम नित अभिसार किया करते
लोगों से प्यार किया करते
प्राणों को लिये हथेली पर—
बेधड़क शिकार किया करते।
यह गति विधि और प्रगति लखकर
नर-नारी हो जाते चञ्चल।
क्यों हमें खूनका हो टोटा
क्यों व्यर्थ बने मानव मोटा
इसलिए चूसकर हम उसको
करते अपना पूरा कोटा।
इसमें तो कुछ अन्याय नहीं,
हम लेते हैं अपना सम्बल।
हम प्रगतिशील हैं बढ़ जाते,
दीवारों पर भी चढ़ जाते
हम चिपक-चिपक कर कपड़ों में
बन लाल सितारे मढ़ जाते
हमसे शोभित होता बिस्तर
हम रत्न-सदृश, वह दुग्ध धवल।
हमको तो बस यह है रोना
दुनिया में अपनापन खोना
वे पीट रहे खटिया हरदम
क्या खटक रहा खटमल होना।
उसपर भी सूने कोटर
हैं डाल रहे वे जलता जल।





कल की चिन्ता कौन करे ?

है आज कटा मस्ती में दिन फिर कल की चिन्ता कौन करे।

जब रात नहीं होने की है,
जब खाट नहीं सोने की है,
जब है शरीर में खून नहीं,
जब शक्ति नहीं रोने की है,

इन पूँजीपतियों के आगे खटमल की चिन्ता कौन करे।

कुछ बादल बने दहाड़ रहे,
सुन हिलते जिसे पहाड़ रहे,
वे अपना गला, दूसरों के
कानों का पर्दा फाड़ रहे;

दल के दलदल में फँसे सभी, निर्बल की चिन्ता कौन करे।

हम कभी पहनते सूट रहे,
थे मजे साहबी लूट रहे,
बस नीति हमारी यही रही
सबसे सम्बन्ध अटूट रहे,

जब पूछ आज खद्दर की है, मलमल की चिन्ता कौन करे।

जब नगर-पिता हम कहलाये,
हम उसी समय यह कह आये,
वह मूर्ख कि जो इसमें आये,
वह मूर्ख न जो इसमें आये,
जब हम मेम्बर, लाठी-जूते-चप्पल की चिन्ता कौन करे।
हम हैं-हैं पर बिक चुके हुए,
सबकी करुणा पर रुके हुए,
जनता के कृपा-कटाक्षों पर,
फाभा बन कर हैं झुके हुए,
जब है सर दिया ओखली में मूसल की चिन्ता कौन करे।
मतलब क्या इन्हें सफाई से,
मतलब क्या इन्हें भलाई से,
ये नगर-पिता हैं, बहुत सरल,
हैं दूर सदा कठिनाई से,
चिल्लू भर पानी काफी है, जलकल की चिन्ता कौन करे।
मैंने स्वदेश की सेवा की,
तन-मन-धन कुछ न रहा बाकी,
मैं जेल नहीं, पर खेल गया,
अपने प्राणोंपर, आशा की,
सरकार मगर यह कहती है, पागल की चिन्ता कौन करे।
जबतक रहना है, रहना है,
जो सुख-दुख आये सहना है,
इस प्रगतिशीलता के युग में,
बेधड़क बनें, क्या कहना है,
जब स्वयं समस्या भारी है तो कल की चिन्ता कौन करे।





हाय लेट चले, हा हलेट चले

[हमारे संयुक्त प्रान्त के गवरनर थे सर मारिस हैलेट। इनके काल में ही 'भारत' छोड़ो आन्दोलन चला। इनके गवरनरी शासन ने कुछ दिनों के लिए यहाँ आतंक मचा दिया था। कुछ वर्षों बाद यह यहाँ से हटे। उनके जाने का समाचार सुनकर जनता खुश हुई और कवि ने यह प्रशस्ति लिखी]



थे बड़े लाट बने, जिनका बड़वानल-सा रहा पेट, बिदा हुए,
घूस का, चूस का, भूस का राज रहा 'मनहूस द ग्रेट' बिदा हुए,
इज्जत की न मिली पगड़ी, सर आज लँगोट लपेट बिदा हुए,
क्या कहूँ 'लेट' बिदा हुए लेट, कि खाके चपेट हलेट बिदा हुए।



जो न गवर्नर या न किसी नर को मिली ले वह भेंट बिदा हुए,
हाय, फजीहत ऐसी हुई निज बिस्तर आज समेट बिदा हुए,
चोर बजार के यों अभिसार का बन्द हुआ अब गेट, बिदा हुए,
क्या कहें 'लेट' बिदा हुए लेट कि खाके चपेट हलेट बिदा हुए।



टोरियों की युनिवर्सिटी के जो अनोखे रहे ग्रेजुएट बिदा हुए,
जो न मिला था किसी को कभी वह लेकर सर्टिफिकेट बिदा हुए,
आज बिदा हुए हैं पर खोकर आबरू धूल में मेट बिदा हुए,
क्या कहें 'लेट' बिदा हुए लेट, कि खाके चपेट हलेट बिदा हुए।



जीवन-पुस्तिका को सदा जो रहे दीमकों-से चट चाट बिदा हुए,
काट रहे थे हमें जो सदा मत्कुण से भरे हुए खाट बिदा हुए,
बन्द किये हुए थे जो अभी तक प्रान्त के भाग्य-कपाट बिदा हुए,
खाके चपेट हलेट बिदा हुए, थे जो बड़े बने लाट, बिदा हुए।



सुन के समाचार भयंकर-सा कितने तो धरापर लेट चले,
पुलिसावलि आज अनाथ हुई इस भाँति जो हाथ समेट चले,
रहे मौज उड़ाते सदा उनकी अब तोड़ के भाग्य की प्लेट चले,
सब ओर से घोर है शोर यही—हाय लेट चले, हा हलेट चले।



जा रहे हो पर ऐसे विभीषण का सहयोग मिलेगा कहाँ अब,
जा रहे हो पर प्रान्त के भाग्य में यों सुख-भोग मिलेगा कहाँ अब,
जा रहे हो पर राहु-शनीचर का यह योग मिलेगा कहाँ अब,
जा रहे हो पर हा, हमको तुम-सा अब रोग मिलेगा कहाँ अब।



देख बहादुरी यों जिसकी खरी, डायर भी हुआ कायर देखिये,
यों थे दबाये हुए इस प्रान्त को टयूब को ज्यों कसे टायर देखिये,
शिष्य थे चर्चिल के, अमरी के चचा, जिनमें भरी फायर देखिये,
हाय, वही बड़भागी गवर्नर हो गये आज 'रिटायर' देखिये।



सेठ महाजनों का मिल-मालिकों का अब कौन सिंगार करेगा,
कौन पुलीसको, लीगको, सोलको, मार्शको,'ब्लैक'को प्यार करेगा,
कौन जवाहरलाल को कैद कराने के हेतु प्रचार करेगा,
और है कौन, जो रात में कत्ल, प्रभात में दण्ड-विचार करेगा।





कण्ट्रोल-गीत

रे मन तू रो ले!

राग : राशन



रे मन, अब रो ले।
कैसी आँधी आयी काया का पिंजड़ा डोले।

जो जो तूने पाप किये हैं
छिप कर अपने आप किये हैं

पानी पर कंट्रोल लगा तो आँसू से धो ले।

क्या जीवन से मोह करें हम,
क्या खाकर विद्रोह करें हम,

जब मिलता खाने को केवल गेहूँ दस तोले।



मिलता हमको वस्त्र नहीं था
(और दूसरा अस्त्र नहीं था)

बैठ गये 'वाशिंग कम्पनी' की दुकान खोले।

खाने को अब अन्न नहीं है,
कोई आज प्रसन्न नहीं है,

इसीलिए तो आज बनाये जाते बमगोले।

मानव के घर आज बँधा है
यह युग-जीवन हुआ गधा है

प्रगतिशील बन सुख-दुख की जो अब लादी ढो ले।

लगे हुए कानून भयंकर,
हो जायेगा खून भयंकर,

मुह पर भी 'भारत-रक्षा' है, कोई क्या बोले।





फिर जिसे चाहो उसे तुम जीत लो

•

आजकलकी राजनीतिक चाल तुमको मैं बताऊँ
बन सको जिस तरह मालामाल, तुमको मैं बताऊँ

सब तुम्हारा ठाट मानें
बस तुम्हीं को लाट मानें

व्यर्थ शिष्ट प्रमाद का अधिकार लेकर क्या करोगे ?
गुण्डई जो कर सकें कुछ मीत लो
फिर जिसे चाहो उसे तुम जीत लो

*



डिगरियों के फेर में सब खा रहे हैं रोज धोखा
बिन पढ़े ही चाहते हो अगर अपना रंग चोखा

देख कर गड़बड़ जमाना
चाहते हो धन कमाना

व्यर्थ है, यह नौकरी का भार लेकर क्या करोगे ?

बैठ करके तुम पकौड़ी ही तलो
फिर जिसे चाहो उसे तुम जीत लो ।



दिव्य मंत्र वशीकरण का मैं तुम्हें बतला रहा हूँ
ध्यान रख मंगलाचरण का मैं तुम्हें जतला रहा हूँ

काम लेना है किसीसे
दाम लेना है किसीसे

व्यर्थ है, मैं कह रहा तलवार लेकर क्या करोगे ?

हाथ में तुम सहज वह नवनीत लो
फिर जिसे चाहो उसे तुम जीत लो ।



दर्द लेकर क्या करोगे, प्यार लेकर क्या करोगे
और फिर बेइज्जती, फटकार लेकर क्या करोगे

सुखद जीवन चाहते हो
और यदि धन चाहते हो

व्यर्थ का व्यापार, हाहाकार लेकर क्या करोगे ?

चाटुकारी एक मंत्र पुनीत लो,
फिर जिसे चाहो उसे तुम जीत लो ।





ये शस्त्र-सज्ज आँखें

ये धुरी राष्ट्र हैं आँखें, अथवा हैं मित्र-पड़ोसी,
इनकी चितवन बमवर्षक, है नजर टारपीडो-सी।

किसकी जीवन-नौकाकी करनेको नष्ट उमंगें,
अपनेमें छिपी बिछायीं आँखोंने आज सुरंगें।

ये हैं विमान विध्वंसक, ये युद्धक प्रबल भयानक,
ये कभी-कभी बन क्रूजर कर देतीं नष्ट अचानक।

हैं कभी टैंक बन जातीं, इनमें विचित्र है खूबी,
बन जाती हैं पनडुब्बी, रहतीं आँसूमें डूबी।

ये पक्की जापानी हैं, जबतब प्रतारणा कर दें,
हैं शस्त्रसज्ज जब चाहें, ये 'युद्ध-घोषणा' कर दें।



इन आँखों का जिस दिल पर हो जाय हवाई हमला,
होगा न वहाँ क्षण भर भी कब्जा होने में घपला।

इनपर 'कर्फ्यू आर्डर' का मजमून नहीं लागू है,
इनपर 'भारत रक्षा' का कानून नहीं लागू है।

'वारण्ट' नजरबन्दी का जो कोई लेकर आता,
बस एक नजर में ही वह खुद नजरबन्द हो जाता।

इनकी सरगरमी लखकर सब मित्र तटस्थ हुए हैं,
जाने-अनजाने क्योंकर हम सब अस्वस्थ हुए हैं।

आओ, इनमें बस जाओ, इनमें है ठण्डक पूरी,
इन आँखों में शिमला है, इनमें है बसी मसूरी।

ये हैं फूलों-सी कोमल, काँटे-सी गड़ जाती हैं,
डरती हैं नहीं किसी से सबसे ही लड़ जाती हैं।

इन आँखों के ही दम पर हैं काम हुआ करते सब,
इन आँखों के ही कारण बदनाम हुआ करते सब।

परम स्वार्थी हैं ये हित अपना देखा करतीं,
ये आँखें निज शासन का ही सपना देखा करतीं।

कह रहा बेधड़क इनको आँखें ही मत समझो तुम,
हैं कलाकार वैज्ञानिक, इनकी कीमत समझो तुम।





यह बसन्त में पानी साथी !

[एक बार बसन्त-पंचमी के दिन घोर जलवृष्टि हुई। उस समय जो अचानक प्रकृति की और पुरुष की गतिविधि में परिवर्तन हुआ, उसी स्थिति को देख कर यह कविता लिखी गयी।]

यह बसन्त में पानी, साथी !
पानी गिरा, बसन्त-पंचमी आज हुई बेपानी, साथी !!

:o:

कपड़े पहने पीले-पीले
कसे नहीं, जो ढीले-ढीले
हाय, हुए सब गीले-गीले
इस सूखे बसन्त को पी ले पी ले कहता पानी, साथी !
यह बसन्त में पानी, साथी !!

:o:

बहुत रहे जो चन्द हो गये
ऊनी कपड़े मन्द हो गये
पेटी में थे बन्द हो गये
उन्हें पड़ा फिर से निकालना बड़ी शीत की नानी, साथी !
यह बसन्त में पानी, साथी !!



फिरसे यह मनहूस आ गया
क्या कुछ देकर घूस आ गया
लो, फागुनमें पूस आ गया
किसी युवकको मिली बुढ़ौतीमें ज्यों पुनः जवानी, साथी !
यह बसन्तमें पानी, साथी !!

:o:

क्या विधिसे कुछ चूक हो गयी
कोगलकी रद कूक हो गयी
वह भी डरकर मूक हो गयी
उसकी जगह लगे मेढक टर्राने कर मनमानी, साथी !
यह बसन्तमें पानी, साथी !!

:o:

यह बसन्त, बस अन्त हो गया
क्रुद्ध आज क्यों सन्त हो गया
बैरंग वापस कन्त हो गया
घुसी मन्त्रिमण्डलमें विधिके नीति गड़बड़स्तानी, साथी !
यह बसन्तमें पानी, साथी !!

:o:

बिन बौरे ही आम रह गया
देनेको पैगाम रह गया
लोगोंका प्रोग्राम रह गया
इसको भ्रष्टाचार कहें या इसे कहें शैतानी, साथी !
यह बसन्तमें पानी, साथी !!

:o:



मैं किसको किसका प्यार करूँ ?

मेरे आँगनमें भीड़ लगी, मैं किसको किसको प्यार करूँ ?

ये सास, ससुर, साली, साले,
बीवी, बच्चे, ये घरवाले
ये दिली दोस्त गोरे काले
सब मुझे डियर कहते हैं, प्रिय, किसका-किसका एतबार करूँ ?



कुछ लीडर, कुछ अध्यापक हैं,
कुछ पत्रकार, सम्पादक हैं,
कुछ मुद्रक और प्रकाशक हैं,
अपने कागज की नैया को इस सागर में क्या पार करूँ ?





कुछ कविवर हैं, कुछ शायर हैं,
कुछ डायर हैं, कुछ कायर हैं,
कुछ ट्यूब और कुछ टायर हैं,
भारत-रक्षा का भय मुझ को कैसे इन का व्यापार करूँ ?

❖

कुछ रोते हैं, कुछ हँसते हैं,
कुछ महँगे हैं, कुछ सस्ते हैं,
कुछ ऊबड़-खाबड़ रस्ते हैं,
मेरा दिल बना बैलगाड़ी में कैसे मोटरकार करूँ ?

❖

सब पीनेवाले, मैं साकी,
वे हैं अनेक मैं एकाकी,
कुछ भी न बचेगा क्या बाकी !
सब चाह रहे मैं टें बोलूँ, मैं किस पर अब शृंगार करूँ ?

❖

कुछ प्रेमी असफल बने हुए,
कुछ प्रेमी पागल बने हुए,
कुछ प्रेमी खटमल बने हुए,
हैं काट रहे मुझको प्रतिपल मैं किस पर प्रबल प्रहार करूँ ?

❖

कुछ हृदय खोल दिखलाते हैं,
कुछ प्यार-प्यार चिल्लाते हैं,
कुछ यार-यार हकलाते हैं,
जब ईश्वर ने दीं दो आँखें, मैं बोलो कैसे चार करूँ ?

❖



कोकिले, कुछ बोल दो अब।

[जाड़े की बरसातको देखकर लिखे गये गीतकी पैरोडी]

जगत् में मधुमास आया, कोकिले, कुछ बोल दो अब !
शान्ति के इस पर्व पर मैं माँगता—भूडोल दो अब।

:x:

है भयानक शीत आली, जम गया है खून मेरा,
बन गया है बेधड़क घर आज देहरादून मेरा।
बन्द है जो ग्रीष्म बोतल में उसे तुम खोल दो अब,
भाग जाये शीत सत्वर कोकिले, कुछ बोल दो अब !

:x:

काव्य की क्या बात, अब तो मैं स्वयं अकड़ा हुआ हूँ,
अश्व आगा खान का था, किन्तु अब छकड़ा हुआ हूँ।
शिशिर की मोटर रुकी है तुम जरा पेट्रोल दो अब,
जाग जाय गान जग का कोकिले, कुछ बोल दो अब !

:x:

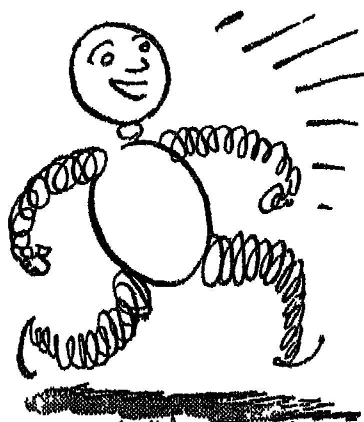


चाय लस्सी हो गयी है, बन गया है बर्फ पानी,
हो गया जीवन पुराना, हो गयी बूढ़ी जवानी।
आज मानव श्वेत आइसक्रीम के ही मोल दो अब,
बोलने मैं जा रहा हूँ, कोकिले, कुछ बोल दो अब!

·×:   :×   ·×:

आज असफल ग्रेजुएट-सा आ गया मधुमास सुन्दर,
प्रकृतिसे है माँगता 'सरविस' जगत् में घूस दे कर।
'नो वेकेंसी' मत कहो तुम, कर न डाँवाडोल दो अब,
शीत पर कण्ट्रोल कर दो कोकिले, कुछ बोल दो अब!





आज विजय का दिन है साथी!

[दूसरा महायुद्ध भी कितना भयंकर था, यह कहने की जरूरत नहीं। उससे कितने लोग डूब गये, कितने लोग ऊब गये। अन्त में मित्र-राष्ट्रों ने मिल कर हिटलर पर विजय पायी और ८ मई '४५ को संसार में विजय-दिवस मनाया गया।]

आज सबेरे उठते ही मैंने देखा 'संसार',
'आज युद्ध का अन्त हो गया' छपा हुआ था तार!
इसी खुशी में हम गद्गद हो कर, नाच उठे ऐ मित्र,
टेलिफोन की गाइड फाड़ी फाड़े सब अखबार।
लगा सोचने पुन: मनाऊँ कैसे विजयोल्लास,
कुछ न मिल सका जब मुझको तो फेंक उठा कतवार!
और नाचने लगा वहीं पर ताक धिनाधिन धिन,
आज विजयका दिन है साथी, आज विजय का दिन!

:x:

दौड़ी आयीं शीघ्र श्रीमती सुन कर मेरा शोर,
वह अवाक् रह गयीं देखकर मेरा ताण्डव घोर।
मैंने भी उस डबल खुशी में आव न देखा ताव,
हाथ पकड़कर दोनों उनको खींचा अपनी ओर!
चिल्लायीं वह और लग गयी घर में मेरे भीड़,
'भूत चढ़ा है भूत,' मचाया सबने कौवा-रोर!
मैं बोला—'मैं भूत नहीं हूँ मैं हिटलर का जिन'
आज विजय का दिन है साथी, आज विजय का दिन!

:x:

'ताण्डव अपना बन्द करो' सब बोले होकर क्रुद्ध
'पहले करो हमारे सम्मुख आत्मसमर्पण शुद्ध'।
यह कह कर वे लगे दिखाने अपनी आँखें लाल,
देखा यह बदरंग, बन गया मैं महात्मा बुद्ध!
बोला फिर मैं पोंछ पसीना—'हो जाओ सब शान्त,
और सुनो खुशखबरी तुम, बन्द हो गया युद्ध!
युद्ध चला यह पाँच वर्ष औ' आठ मास दो दिन',
आज विजय का दिन है, साथी आज विजय का दिन!

:x:

यह सुनते ही लगे नाचने लोग मचा कर धूम,
चार मिनट के लिए बन गया सट्टी मेरा रूम।
एक-एक कर चले गये जब मेरे घर से लोग,
मैंने उनसे कहा, 'अरे क्यों बनी हुई तुम सूम!
दिया जलाओ, करो रोशनी और खिलाओ भोज,
यह सरकारी हुकुम नहीं क्या तुमको है मालूम?
नाच रहे हैं चर्चिल-ट्रूमेन, नाच रहे स्टालिन!'
आज विजय का दिन है, साथी आज विजय का दिन।

:x:

वह बोलीं—चुप रहो, अरे दिखलाओ मत उत्साह,
नून-तेल की भी क्या तुमको कभी रही परवाह ?
दिया जलाऊँ खाक, नहीं मिलता मिट्टी का तेल,
अंध घुप्प है, इसीलिए तो नहीं सूझती राह !
और भोज का ओज व्यर्थ है देखो राशन-कार्ड,
बिना स्टेट के बने हुए हो जैसे शाहंशाह !
भारत भी तो आज बेधड़क बना हुआ बर्लिन।
आज विजय का दिन साथी है, आज विजय का दिन !





नोट ले कर क्या करूँगा ?

[यह रचना उस समय की है, जब सरकार ने एक कानून द्वारा हजार रुपयेवाले नोटों का प्रचलन बन्द कर दिया था। वे नोट बेकार हो गये थे और उनके स्वामियों की दशा विचित्र हो गयी थी। ऐसे ही एक स्वामी का यह करुण क्रन्दन इस गीत में है।]

व्यर्थ हूँ मैं आज़ जिन्दा,
व्यर्थ नोटोंका पुलिन्दा,
और अब इससे भयंकर चोट ले कर क्या करूँगा !



यह नया कानून तेरा,
कर रहा है खून मेरा,
बेधड़क अब कागजों के नोट ले कर क्या करूँगा !





चार नोट हजारके थे,
प्यार और दुलारके थे,
आज वे हैं शत्रु, उनकी ओट ले कर क्या करूँगा !



हा, मुनाफा जो किया था,
देख जिनको मैं जिया था,
वे गला अब टीपते दम घोंट, ले कर क्या करूँगा !



स्वर्ग जो था नरक होता,
आज बेड़ा गरक होता,
हाय कागजकी बनी यह 'बोट' ले कर क्या करूँगा !



किस जनम का पाप आया,
जो कमाया वह गँवाया,
जब लँगोटी पहननी है, कोट ले कर क्या करूँगा !



मैं मरा बिन मौतके अब,
धन कृपणका क्षय हुआ सब,
आज अणु-बमका कहो, विस्फोट ले कर क्या करूँगा !







फिर भी दुनिया दीन अभी तक

हम जिनको कहते थे कछुआ
प्रगतिशील वे हुए बोजुंआ
और इधर खरगोश बना मैं तन्द्रा में तल्लीन अभी तक ।



प्लेटों पर वे प्लेट भर चले
जल्दी-जल्दी पेट भर चले
वे तो खाने लगे मिठाई मैं खाता नमकीन अभी तक ।



सब लड़-भिड़कर शान्त हो गये
सभी राष्ट्र विश्रान्त हो गये
किन्तु जरा यह साहस देखो, लड़े जा रहा चीन अभी तक ।



गये जेल जो, बने मिनिस्टर
चोरों का घर गया खूब भर
पर साहित्यिक युग-निर्माता है कौड़ी का तीन अभी तक !

:o:

सुनता ऐसी बनी दवा है
बनता जिससे श्वेत तवा है
फिर भी मुझ जैसे प्राणी तो बने न हाय हसीन अभी तक !

:o:

पशु जो थे मानव कहलाये
मानव भी दानव कहलाये
पर मेरी सुलझी न समस्या, मैं हूँ बना मशीन अभी तक ।

:o:

दुनियावाले सँभल रहे हैं
और सवारी बदल रहे हैं
मगर उन्हें देखो वे चलते ऊँटों पर आसीन अभी तक ।

:o:

यद्यपि भाग्य हमारे जागे
नेदरसोल मार्श-स्मिथ भागे
फिर भी भूल नहीं पाता हूँ मैं उनकी संगीन अभी तक ।

:o:

जो मिलता है खा जाता हूँ
खा ही नहीं पचा जाता हूँ
फिर भी है यह किस्मत पतली हो न सका हूँ पीन अभी तक ।

:o:

ज्ञान और विज्ञान बढ़ गया
चीजों का भी दाम चढ़ गया
देख रहा हूँ गद्दी बेधड़क फिर भी दुनिया दीन अभी तक।

